CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दे. नं. ६४८

कमाला पुष्प-१२

डकोपनिषद् प्रकाश

ण्डकोपनिषद् की बोधगम्य व्याख्या।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या च द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं ममदेव देवं॥

लेखक
पं० गणेश चौबे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

दे. नं. ६१६८

वा. वि. पु.

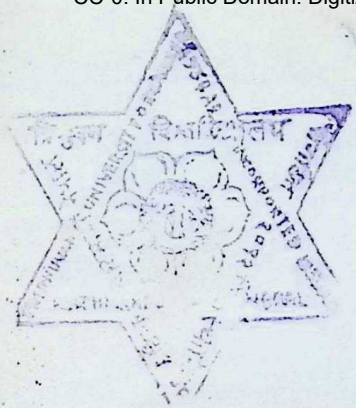

वेदान्त १३८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्ञानोदय पुस्तकमाला पुष्प–१२

मुण्डकोपनिषद्-प्रकाश

लेखक
पं० गणेश चौबे

लेखक—पं० गणेश चौबे (निवासी ग्राम कोठरा, थाना सासाराम, जिला शाहाबाद का) अपने सुपुत्र रमेश के साथ।

[मूल्य १·५० पैसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाशक :
अध्यक्षा, ज्ञानोदय पुस्तकमाला प्रकाशन समिति
भारद्वाज भवन, मिल एरिया, साकची,
जमशेदपुर-१ फोन नं० ५२६९

सर्वाधिकार सुरक्षित :
अध्यक्षा ज्ञानोदय पुस्तक माला प्रकाशन समिति,
भारद्वाज भवन, मिल एरिया, साकची, जमशेदपुर

प्रथम संस्करण १९६९

मूल्य : १·५० पैसे

पुस्तक मिलने का पता :—

१. भारद्वाज भवन, मिल एरिया, साकची, जमशेदपुर-१
फोन नं० ५२६९

२. श्री किसोरी प्रसाद, ब्रास आर्ट्स पैलेस, चर्च रोड, राँची,
फोन नं० ८८५

३. राजेन्द्र स्टोर्स, साकची बाजार, जमशेदपुर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुण्डकोपनिषद्-प्रकाश

नम्र-निवेदन

जमशेदपुर
१६-१०-६९

प्रिय पाठक-पाठिकाएँ !

सादर नमस्ते ।

प्रस्तुत पुस्तक की रचना डाक्टर राम भजन राम मार्डन साइन्टिफिक होमियो हाल, साकची बाजार, जमशेदपुर की प्रेरणा से हुई है। परा और अपरा विद्या की चर्चा की गई है।

स्रुति के वचन की छपाई बड़े अक्षरों में हुई है। मंत्र संख्या दी गई हैं। अन्त में पृष्ठ ५५ पर मूल मंत्र भी छपे हैं। उनकी संख्या भी छपी है, ताकि पाठक वृन्द चाहें तो मूलमंत्र और उनके अर्थ मिला कर पढ़ लें।

हमारी संस्था की यह बारहवीं रचना है।

संस्कृत बोध नहीं होने से, मैं नहीं कह सकता कि मंत्रों का अर्थ कहाँ तक सही हो पाया है ! परन्तु लिखते समय मुझे पूर्ण विश्वास रहा है कि भगवान सदा सही ही लिखवावेंगे। वास्तव में, मुझे भीतर से आभास मिलता है कि लेखनी उस अदृश्य-शक्ति श्रोत से संचालित होती है। वही लिखती है जो वह शक्ति लिखाती है। फिर सब कुछ ठीक क्यों न हो !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हमारी ये बातें आप में बहुतों को अजीब-सी लग सकती हैं। पर सही हैं तर्क की कसौटी पर ये कसी नहीं जा सकतीं। ये तो आभास पाने की हैं।

प्रथम रचना गीतामृत के प्रकाशन के बाद से ही रचना कार्य को सार्वजनिक रूप से करने लगा। बैंक में उसका एकाउन्ट खोल कर इसके आय-व्यय का हिसाब रखने लगा।

संस्था के रूप में चलाने के लिए, दिनांक १५-४-६८ को नियमावली बनाई, जो स्नेह भरी कहानियाँ में छपी। दिनांक २०-४-६९ को श्रीमती गायत्री देवी, भारद्वाज भवन, मिल एरिया, साकची, जमशेदपुर को संस्था की अध्यक्षा मनोनीत किया। नियुक्ति पत्र सियावर राम नामक रचना में छपा। बैंक एकाउन्ट आदि अध्यक्षा के नाम में कर दिया गया। संस्था का सारा भार अध्यक्षा पर सौंप दिया गया।

अध्यक्षा श्रीमती गायत्री देवी स्वर्गीय के० डी० भारद्वाज जी की एकलौती पुत्री है। धर्म परायण, ब्राह्मण कुल की, सुसंस्कार-सम्पन्न नारी हैं। साकची मिल एरिया, जमशेदपुर में पिता से प्राप्त भावनादि सम्पत्ति है। यहीं—भारद्वाज भवन मिल एरिया, साकची में—अपनी माता तथा दो पुत्र एवं दो पुत्रियों के साथ रहती हैं।

संस्था के मुख्य कार्यकर्त्ताओं में श्रीमती जयवन्ती देवी निवासी ग्राम मेरले, थाना करारा जिला राँची, फिलहाल टाटानगर का नाम बड़े आदर के साथ लिया जा सकता है। इन्हें संस्था की जननी कहने में कोई अत्युक्ति नहीं होगी। निश्चय ही ये जग में पूजित होंगी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संस्था के कार्य-कर्त्ताओं के पठन-पाठन की सुविधा के लिए दिनांक १७-६-६९ को एक पुस्तकालय अध्यक्षा के निवास स्थान भारद्वाज भवन, मिल एरिया, साकची, जमशेदपुर में ही खोला गया। अध्यात्म पुस्तकालय उसका नाम रखा गया। पुस्तकालय में एक मात्र सभी धर्मों की धार्मिक पुस्तकें ही रखी जायँगी। उसकी अध्यक्षा श्रीमती गायत्री देवी ही हैं। पुस्तकाध्यक्ष श्री जगन्नाथ तिवारी काशीडीह, साकची हैं। पुस्तकालय का सृजन धीरे-धीरे हो रहा है।

फिलहाल पुस्तकालय हफ्ता में, एक दिन रविवार को ८ से १० बजे तक दिन में तथा सात से साढ़े आठ बजे तक शाम को खुलता है।

साम्प्रदायिकता से अलग रहकर अपनी रचनाओं के माध्यम से हम शुद्ध आचरण का मन्त्र फूँकना चाहते हैं। चाहते हैं कि हम और हमारी संस्था के कार्यकर्त्ता अपने आचरण से आदर्श प्रस्तुत करें। जो कहें-सो करें। इस सम्बन्ध में हमारी संस्था की नियमावली जो स्नेह-भरी कहानियाँ में छपी हैं, पठनीय है। पाठक वृन्द उसे पढ़ें।

हम इसमें पूर्णतया विश्वास करते हैं कि जो कुछ भी हम कर रहे हैं एवं जो करने का संकल्प कर रहे हैं—सो सब उस जगनियन्ता की प्रेरणा से ही, उसकी इच्छावश ही। जो पाठक वृन्द ठीक समझें सो उसी का जो गलत समझें सो भी उसी का। हमारा अपना जीवन तो उस तिनके की तरह लगता है, जो सागर में पड़ा लहरों की मरजी पर बहा करता है। हम यह करें यह न करें, हमारे वश की बात नहीं। आप चाहें मेरी यह कमजोरी समझें, चाहे जो समझें पर यही असलियत है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्थानीय अस्पताल में डाक्टर हैं, कम्पाउन्डर हैं, ड्रेसर हैं, नर्स हैं, वार्ड वॉय हैं, चौकीदार आदि कई हैं । सब मिलकर अस्पताल को चलाते है । सब श्रेणी के लोगों की सेवाएँ अनिवार्य हैं । इस विश्व का संचालन भी वैसे ही भिन्न-भिन्न तरह के लोगों से होता है । सृष्टिकर्त्ता आवश्यकतानुसार भिन्न-भिन्न योग्यता और प्रकृति के लोग भेजता है । जिस काम के लिए जिसको भेजता है, वह वही करता है ।

किसी-किसी के जिम्में वह कई काम भी सौंप देता है । जैसे उसने मेरे जिम्मे पुलिस का काम सौंपा और रचनाओं का भी । और न जाने और भी कुछ सौंपा हो । सो आगे मालूम होगा । मुझे दोनों काम करने पड़े । अगर और कुछ सौंपा गया होगा तो सो भी करना होगा ।

यही सचाई है, किन्तु सहज में समझ में नहीं आती । यह भी उसकी महिमा है ।

देव-दानव, सुर-असुर, सज्जन-असज्जन की भी बात सुनिए—नाटक में सुपात्र की आवश्यकता होती है तो खल पात्र की भी । सृष्टि को भी नाट्यशाला हो समझें । इसके रंग-मंच के हम सब पात्र हैं । सभी तरह के पात्र आवश्यक हैं । इसीलिए तो जगनियन्ता ने सभी तरह के लोगों को बनाया है । अपने-अपने जगह पर सब का महत्व है । इसलिए किसी को हेय व हीन नहीं समझना चाहिए । अगर रावण न हुआ होता तो राम अपनी वीरता कैसे दिखलाते ! भला आदर्श प्रस्तुत कैसे करते !!

अब तो शरीर धीरे-धीरे थकता-सा लगता है । फिर भी भगवान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

को जब तक काम लेना है शरीर कायम रखेंगे ही। ऐसे जाने की तैयारी भी कर ली है।

आप सबों के मंगल की कामना करते हुए; अब विदा लेता हूँ। जय विश्व।

आप सबों का आत्मरूप
गणेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषय-सूची

शीर्षक	विषय	पृष्ठ
१—	प्रस्तावना ..	९
२—	शब्दों के अर्थ ..	१२
३—	मुण्डक-१ खण्ड १-आचार्य परम्परा वर्णन, परा और अपरा विद्या के स्वरूप का वर्णन, सृष्टि क्रमादि की चर्चा ..	१५
४—	मुण्डक-१, खण्ड-२-कर्म निरूपण, अग्निहोत्र वर्णन, ज्ञान रहित कर्म की निंदा, ऐहिक और पारलौकिक भोगों की असारतादि ..	२१
५—	मुण्डक-२ खण्ड-१-ब्रह्म से जगत् की उत्पत्ति, ब्रह्म के स्वरूपादि का वर्णन ..	२९
६—	मुण्डक-२ खण्ड-२ ब्रह्म स्वरूप निर्देशन ब्रह्म साक्षात्कार विधि आदि ..	३४
७—	मुण्डक-३ खण्ड-१ ब्रह्म निरूपण आत्मदर्शन के साधन, सत्य की महिमा, चित शुद्धि आदि का वर्णन..	४१
८—	मुण्डक-३ खण्ड-२ ब्रह्मवेत्ता की पूजा के फल, मोक्षादि का वर्णन ..	४७
९—	मुण्डकोपनिषद् के मूल मंत्र ..	५५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रस्तावना

जमशेदपुर
१३-५-६९

प्रिय मित्र !

सादर प्रणाम् !

ईश-शरणागतों का एक अपना परिवार होता है । हमारे परिवार के सदस्य श्री राम भजन राम, मार्डन साइन्टिफिक होमियोहाल, साकची बाजार, जमशेदपुर की इच्छा है कि परा और अपरा विद्या की चर्चा की जाय ।

प्यारे मित्र ! निश्चय ही उनकी इच्छा प्रभु की इच्छा है । वही तो उर प्रेरक हैं । फिर आइए, चर्चा अविलम्ब शुरू करें—

प्यारे मित्र ! संक्षेप में, वेद शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष आदि अपरा विद्या है । इनसे भौतिक ज्ञान भर होता है ओर जो विद्या ब्रह्म का ज्ञान कराती है; वह परा विद्या कहलाती है । यही ब्रह्म-विद्या भी कही जाती है ।

प्यारे मित्र ! परा विद्या सर्व प्रथम ब्रह्मा को प्राप्त हुई । ब्रह्माजी ने अपने ज्येष्ठ पुत्र अथर्वा को बतलाई । ऋषि अथर्वा ने ऋषि अङ्गी को, फिर ऋषि अंगी ने ऋषि भरद्वाज के पुत्र सत्यवह मुनि को बतलाई । वही ब्रह्म विद्या आगे चलकर, अङ्गिरा ऋषि को प्राप्त हुई ।

प्यारे मित्र ! ऋषि अङ्गिरा त्रेता युग में हुए थे । वे ब्रह्मज्ञानी थे । सघन वन बीच उनका आश्रम था । वन के शांत वातावरण में रहते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और भगवत् चिन्तन करते। कन्द-मूल फल खाते। बल्कल पहनते। संतोष धन बटोरते। शरीर भर धरती पर रहता, मन निरंतर भगवत् चिन्तन में रत रहता। आनन्द-कानन में विचरता।

प्यारे मित्र ! एक दिन जब ऋषि अङ्गिरा सुख से बैठे थे, शौनक नामक एक गृहस्थ उनके आश्रम पधारे। शौनक जो ऋषि को दण्डवत् कर, विनीत भाव से कर जोड़े बोले,—"भगवन् ! वह कौन सी विद्या है, जिसे जानने के बाद, और कुछ जानना शेष नहीं रह जाता ? उसे हमें बतलाइए।"

प्यारे मित्र ! ऋषि अङ्गिरा ने बड़े प्यार से शौनक जी को अपने आश्रम में रखा और सस्नेह परा और अपरा विद्या का उपदेश ६० मंत्रों में दिया।

प्यारे मित्र ! परा और अपरा विद्या मुण्डकोपनिषद् में बतलाई गई है, जो अथर्ववेद के मंत्र भाग के अन्तर्गत हैं।

प्यारे मित्र ! मुख्य उपनिषद् १०८ हैं। मुण्डकोपनिषद उनमें से एक है। उसमें तीन मुण्डक हैं और प्रत्येक मुण्डक में दो-दो खंड हैं। उसमें कुल ६३ मंत्र हैं, जो निम्न प्रकार से विभाजित हैं :—

मुण्डक	खंड	मंत्र	विषय
प्रथम मुण्डक	१	९	आचार्य परम्परा वर्णन, शौनक के प्रश्न; ऋषि अङ्गिरा के उत्तर, परा और अपरा विद्या के स्वरूप का वर्णन, सृष्टि क्रम आदि की चर्चा।
"	२	१३	कर्म निरुपण, अग्नि होत्र–वर्णन, ज्ञान रहित कर्म की निंदा, ऐहिक और पार-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुण्डक	खंड	मंत्र	विषय
			लौकिक भोगों की असारता इत्यादि।
द्वितीय मुण्डक	१	१०	ब्रह्म से जगत की उत्पत्ति, ब्रह्म के स्वरूप, उसका सर्व कारणत्व (हेतुता) आदि का वर्णन।
,,	२	११	ब्रह्म स्वरूप निर्देशन, उसे जानने की विधि, ब्रह्म साक्षात्कार की विधि और उसका फल आदि का वर्णन।
तृतीय मुण्डक	१	१०	प्रकारान्तर से ब्रह्म निरूपण ईश्वर दर्शन से जीव की शोक-निवृत्ति, आत्म दर्शन के साधन, सत्य की महिमा, चित्त शुद्धि आदि का वर्णन।
,,	२	१०	आत्मवेत्ता की पूजा के फल, निष्कामता से पुनर्जन्म की निवृत्ति, आत्म दर्शन के प्रधान साधन, जिज्ञासा, मोक्ष आदि का वर्णन है;

मुण्डक=३ खण्ड=६ मंत्र=६३

प्यारे मित्र! अगले पत्र में, प्रथम मुण्डक के खण्ड १ की चर्चा होगी। मित्र! शौनक जी अङ्गिरा ऋषि के आश्रम में विराज रहे हैं। फिर हम दोनों भी क्यों नहीं वहीं रहें। ऋषि के बचनामृत पान करें। जंगल बीच विचरे। मनोहारी छटा देखें। पक्षियों के कलरव सुनें। भौरों के गुञ्जार श्रवण करें। कल-कल बहती नदी धारा में गोते लगावें।

प्यारे मित्र! जंगल बीच आश्रम के वर्णन से मेरा मन लुभा जाता है। विह्वल हो उठता है। जी चाहता है, वहीं बसेरा करूँ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऋषि मुनि की नाईं जीवन बिताऊँ। प्राकृतिक सौन्दर्य को मन भर पान करूँ। लगता है, किन्हीं पिछले जन्मों में मेरा वास जंगल अवश्य था। आश्रमवासी जरूर रहा हूँ—तभी तो आश्रम जीवन के लिए मन मचल जाता है। मनाए न मानता है।

प्यारे मित्र! मुण्डकोपनिषद् में निम्नांकित शब्द विशेष अर्थ में व्यवहृत हुए हैं; जिनका अर्थ शुरू में ही जान लेने से आगे के विषय समझने में आसानी होगी--

अग्नि होत्र=प्रति प्रातःकाल और संध्या को मंत्र द्वारा स्थापित अग्नि में हवन करने का यज्ञ।

अग्नि होत्री=अग्नि होत्र करने वाला ब्राह्मण।

अव्यय=विकार शून्य, सर्वदा समान रहने वाला। बिना आदि अन्त का, ब्रह्म।

आत्मवेत्ता=आत्मा को जानने वाला।

आत्म ज्ञानी=आत्मा को जाननेवाला। वह जिसे आत्मा होने का ज्ञान हो गया हो।

अब्रह्मवित्=ब्रह्म को नहीं जानने वाला।

अग्राह्य=न ग्रहण करने योग्य।

आत्मा=ईश्वर का अंश जीव, बोलता जीव, ब्रह्म। इस पुस्तक में आत्मा कहीं-कहीं, ईश्वर अंश जीव के अर्थ में, तो कहीं-कहीं पूर्ण ब्रह्म के अर्थ में व्यवहृत हुआ है।

आत्मा संस्कृत में पुलिङ्ग और हिन्दी में स्त्रीलिङ्ग माना जाता है।

आत्म-दर्शन=आत्मा की जानकारी।

अन्न=अनाज, जल, सूर्य, प्राण, पृथ्वी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आग्रयण कर्म=अगहन मास में होने वाला धार्मिक अनुष्ठान।

उपनिषद्=ब्रह्म विद्या, जिससे अज्ञान का नाश होता है तथा जिसके द्वारा परमात्मा की प्राप्ति होती है।

काली=अग्नि की ज्वाला।

कराली=अग्नि की सात जिव्हाओं में से एक।

कल्प=छह वेदाङ्गों में एक।

ज्ञेय=ज्ञातव्य, ज्ञान योग्य, जिसका जानना योग्य हो। जानने योग्य।

छन्द=छह वेदाङ्गों में एक।

दशकर्म=द्विजों के दश संस्कार, यथा-गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, निष्क्रमण, नामकरण, चूड़ाकरण, उपनयन और विवाह।

द्युलोक=स्वर्ग

निर्वेद=अपमान, वैराग्य दुख, वेद रहित।

नित्य=सतत, प्रति दिन का, सब दिन रहने वाला, शाश्वत, जिसकी परम्परा कभी न टूटे, त्रिकाल व्यापी, अविनाशी।

निमेष=पलक मारना

उन्मेष=प्रकाश, चमक, आँख का खुलना।

परा=उपनिषद् विद्या, ब्रह्म विद्या, वह विद्या जो ब्रह्म की जानकारी करावे।

पौर्ण मास कर्म=पूर्णमासी के दिन होने वाला धार्मिक अनुष्ठान।

प्रणव=ओंकार, परमेश्वर, ओंकार मंत्र जो अ, उ और म् की सन्धि से बना है। इसमें अकार शब्द से विष्णु, उकार से महेश और मकार से ब्रह्मा का बोध होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रमाद=भ्रम, भ्रान्ति, अन्तःकरण की दुर्बलता, योग शास्त्र के अनुसार समाधि के साधनों को झूठा मानना।

ब्रह्म ज्ञानी = ब्रह्म को जानने वाला।

ऋत्विक=पुरोहित, वेद के मंत्रों से यज्ञ में कर्म काण्ड कराने वाला।

वेदाङ्ग==वेद के अंग या शास्त्र जो छह हैं। यथा—शिक्षा कल्प, व्याकरण, निरुक्ति, ज्योतिष और छन्द।

शास्त्र=हिन्दुओं के ऋषि मुनियों के बनाए हुए प्राचीन ग्रंथ, जिनमें मनुष्यों के हित के लिए, अनेक प्रकार के कर्त्तव्य बतलाए गए हैं। इन धर्म ग्रंथों की संख्या १८ है; यथा–शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्ति, ज्योतिष, छन्द, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, मीमांसा, न्याय, धर्म शास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्व वेद और अर्थ शास्त्र।

शिक्षा = छह वेदाङ्गों में एक, जिसमें वेदों के स्वर, वर्ण, मात्रा आदि का निरूपण हुआ है।

श्रद्धा = बड़ों के प्रति पूज्य भाव, आदर, आप्त पुरुषों तथा शास्त्रादि में दृढ़ निश्चय।

श्रौत=श्रुति संबंधी, श्रवण संबंधी-वह जो वेद के अनुसार हो। वेद विहित धर्म यथा–दान, अग्नि होत्र और यज्ञ।

मेरे प्यारे मित्र। हम दोनों रचना-क्षेत्र में आत्मोद्धार के लिए ही उतरे हैं;—इसे न भूलें। पढ़े विषयों को जीवन में उतारने का भरसक प्रयास करें।

अनन्त शुभ कामनाओं के साथ आपको पुनः प्रणाम।

आपका आत्मरूप

गणेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुण्डक १ : खण्ड १

जमशेदपुर
१३-५-६९

प्यारे मित्र !

सादर प्रणाम !

आज दिन का यह दूसरा पत्र है। दोनों साथ--साथ मिलेंगे। पिछले पत्र में आप का परिचय मुण्डकोपनिषद् से करा चुका हूँ। आगे मुण्डक-१ के प्रथम खण्ड की चर्चा शुरू की जाती है।

सृष्टि की रचना कैसे हुई ?–सो सुनिए—

प्रारम्भ में संसार में अँधेरा छाया हुआ था। सर्व प्रथम ब्रह्मा स्वयम् उत्पन्न हुए। फिर उन्होंने अँधेरे को दूर किया। सारी सृष्टि की रचना की। नदी, नाले, पहाड़, जंगल, जीव-जन्तु, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, स्त्री-पुरुष, चाँद-सूरज सब कुछ बनाए। सब को कार्य रत कर, सृष्टि की वृद्धि कराई। सब में, आप से आप, वृद्धि का मंत्र फूँका। सब आप से आप फूलने-फलने लगे। जीवों की जोड़ी बनाकर उन्हें वृद्धि करने को प्रेरित किया। १

प्यारे मित्र ! सम्पूर्ण देव भी ब्रह्मा के बाद ही उत्पन्न हुए। ब्रह्मा को ब्रह्म-विद्या स्वयम् प्राप्त हुई। जग कल्याण के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लिए, उन्होंने उसे अपने ज्येष्ठ पुत्र—अथर्वा को सिखलाया। १

अथर्वा ने कालान्तर में, उस ब्रह्म-विद्या को ऋषि अङ्गी को सिखलाया। ऋषि अङ्गी ने उसे भरद्वाज ऋषि के पुत्र सत्यवह मुनि को बतलाया। इस प्रकार से बड़े छोटे से कहते गए। वही ब्रह्म-विद्या आगे चलकर अङ्गिरा ऋषि से कही गई। २

एक दिन शौनक नामक कोई एक श्रेष्ठ गृहस्थ, अङ्गिरा ऋषि के पास आया। दण्डवत कर विनीत भाव से जिज्ञासा भरे शब्दों में पूछा,—"भगवन! वह कौन सी विद्या है, जिसके जान लेने पर सब कुछ का ज्ञान हो जाता है?

उसे जानने की मेरी आकाँक्षा है। दया कर बतलाइए।" ३

प्यारे मित्र! शौनक जी महर्षि अङ्गिरा को बहुत—श्रद्धालु जिज्ञासु और ब्रह्म-विद्या के अधिकारी प्रतीत हुए। ऋषि ने उन्हें सस्नेह आशीर्वाद दिया, प्यार से बैठाया। कुशल पूछा। फिर स्थिर होने पर, सहज-भाव से शौनक जी के प्रश्नों के उत्तर देने लगे।

महर्षि अङ्गिरा बोले,—"प्रिय शौनक! वेद के मर्म को जानने वालों ने कहा है कि परा और अपरा नामक दो प्रकार की विद्याएँ जानने योग्य हैं। ४

प्यारे मित्र! यहाँ शंका उठ सकती है कि शौनक जी ने तो एक विद्या पूछी थी। ऋषि अङ्गिरा दो की क्यों चर्चा करने लगे। मित्र!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परा विद्या को स्पष्ट करने के लिए, ऋषि ने प्रसंगवश अपरा विद्या की भी चर्चा की है। वास्तव में, परा विद्या ही बतलाई है।

महर्षि अङ्गिरा आगे बोले—

"प्रिय शौनक ! ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्व वेद—ये चार वेद और उनके वेदाङ्ग–शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्ति, छन्द और ज्योतिष—अपरा विद्या कहलाते हैं।

और जिस विद्या से उस विलक्षण ब्रह्म की जानकारी होती है, जो अदृश्य है; अग्राह्य है, अगोत्र है, अवर्ण है; हाथ-पाँव, आंख-कान से रहित है, सर्व व्यापी है, अत्यन्त सूक्ष्म है; सदा एक-सा रहने वाला है; अविनाशी है और जिसे योगी-जन सदा सर्वत्र पाते हैं—वह परा विद्या कहलाती है।

५, ६

प्रिय शौनक ! जिस प्रकार मकड़ी अपने भीतर से ही तन्तुओं को निकालती है; उन्हें फैलाकर जाल बुनती है; फिर निगल भी जाती है, तथा जिस प्रकार से औषधियाँ पृथ्वी से आप से आप, उपजती हैं एवं जिस प्रकार जीवित प्राणी के शरीर से, शरीर के विपरीत बाल और रोए उत्पन्न होते हैं, उसी प्रकार ब्रह्म से ही यह सृष्टि उपजती है। उत्पत्ति के लिए, किसी भी अन्य साधन की आवश्यकता नहीं होती। उस ब्रह्म से ही, विश्व उत्पन्न होता है; और कालान्तर में उसी में विलीन हो जाता है। ७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्यारे शौनक ! जब ब्रह्म की इच्छा सृष्टि रचने की होती है, तब वह तप द्वारा थोड़ा स्थूल हो जाता है। फिर उससे अन्न उपजता है। अन्न से प्राण, प्राण से मन, मन से सत्य, सत्य से लोक, लोक से कर्म, और कर्म से कर्म-फल उत्पन्न होता है। उस कर्म फल का नाश, बिना भोगे सौ करोड़ कल्प तक नहीं होता। ८

प्यारे शौनक ! वह ब्रह्म जिससे यह विश्व आप से आप, उत्पन्न होता है, सब को सामान्य रूप एवं विशेष रूप से भी जानता है। उसका ज्ञान रूप तप है। उसी से सृष्टि कर्त्ता, ब्रह्मा नाम रूप और अन्न उत्पन्न होते हैं।" ९

प्यारे मित्र ! प्रथम मुण्डक के खण्ड एक की चर्चा समाप्त हुई। अगले पत्र में खण्ड दो की की जाएगी।

प्यारे मित्र ! मकड़ी को जाल बुनने के लिए, किसी अन्य साधन की आवश्यकता नहीं होती। वह अपने भीतर ही तन्तु रचती है; और उसे ही फैलाकार जाल बुनती है। फिर इच्छा होने से अपने भीतर ही सिमट भी लेती है। ब्रह्म भी वैसा ही करता है। अपने संकल्प मात्र से, अपने में से विश्व को उत्पन्न करता है; और प्रलय में अपने में सिमट लेता है।

प्यारे मित्र ! ऊपर कहा गया है कि ब्रह्मा सृष्टि रचते हैं। फिर कहा गया कि सृष्टि ब्रह्म से उत्पन्न हुई है। दोनों में भेद का भ्रम नहीं होना चाहिए। ब्रह्मा की उत्पत्ति ब्रह्म से ही होती है। वे ब्रह्म के कार्य-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाहक के रूप में सृष्टि रचते हैं। किन्तु सब कुछ उत्पन्न तो ब्रह्म से ही होता है।

आइए—एक भजन गाकर विदा होवें :—

तेरे पूजन को भगवान बना मन मन्दिर आली शान।
किसने जानी तेरी माया, किसने भेद तिहारा पाया॥
हारे ऋषि मुनि करि-करि ध्यान, बना मन मन्दिर आली शान॥१॥
तूही जल में, तूही थल में, तूही मन में तूही वन में।
तेरा रूप अनूप जहान, बना मन मन्दिर आलो शान॥२॥

प्यारे मित्र! वन्दना-भजन ही मेरी आत्मा की खुराक है। इन से मन पवित्र और प्रसन्न होता है। इनसे ही अन्तःकरण का मल धुलता है। पर वाणी के साथ हृदय का मेल रहना चाहिए।

प्यारे मित्र! पवित्र अन्तःकरण वाला प्राणी ही ब्रह्म विद्या का अधिकारी होता है। अन्तः करण को पवित्र करने के कई अन्य साधन हैं जिनकी चर्चा हमारी रचनाओं में बीच-बीच में होती आयी है। ईश वन्दना भी उन में एक है। साधक अपने मनोकूल साधनों को अपनायें। जो मार्ग जिनको सुगम जँचे; उसी पर चलकर मुक्ति-लाभ करें। ऐसा नहीं है कि बिना भजन व वन्दना गाए मुक्ति होगी ही नहीं। अन्य साधन अपनाने से भी होगी। जरूर होगी।

प्यारे मित्र! इसी प्रकार से बिना ब्रह्म चर्चा के भी ब्रह्म की जानकारी हो जाती है। हल चलाते-चलाते, खेत कोड़ते-कोड़ते, जूते सीते-सीते आदि कठिन परिश्रम करते-करते ही ब्रह्म की जानकारी अनायास हो जाती है। इधर कितने विद्वतजन वेद शास्त्र रटते ही रह जाते है। रत्ती भर लाभ नहीं होता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्यारे मित्र ! रचनायें लेखक के व्यक्तित्व को ही प्रस्तुत करती हैं। मेरी आस्था ईश्वर शरणागत में अटूट है। इसलिए मेरे हृदय के भाव रचनाओं में प्रकट हो जाते हैं।

और मेरे प्यारे मित्र ! भगवत प्राप्ति के सभी मार्ग--कर्मयोग, भक्ति योग और ज्ञान योग—एक दूसरे पर आधारित प्रतीत होते हैं ! एक दूसरे के पूरक ही।

अब विदा लेता हूँ। आप को पुनः प्रणाम !

आपका आत्मरूप
गणेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुण्डक १ : खण्ड २

जमशेदपुर
१४-५-६९

प्यारे मित्र !

सादर प्रणाम !

पिछले पत्र में प्रथम मुण्डक के प्रथम खण्ड की चर्चा हो चुकी है। आज खण्ड दो की करनी है।

प्यारे मित्र ! मानव जीवन के मुख्य उद्देश्य—अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष की प्राप्ति है। अर्थ, धर्म और काम की प्राप्ति का साधन अपरा विद्या है; और मोक्ष की प्राप्ति का साधन परा विद्या है। इस लिए, परा और अपरा दोनों विद्याएँ मानव जीवन के लिए आवश्यक हैं।

प्यारे मित्र ! अगले सूत्रों में महर्षि अङ्गिरा जीवन के मुख्य उद्देश्य अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष की प्राप्ति-विधि बतलाते हैं। सो उनकी वाणी में ही सुनिए—

महर्षि अङ्गिरा बोले—

"प्यारे शौनक ! ऋग्वेद, अजुर्वेद और सामवेद में जिन अग्नि होत्रादि कर्मों की चर्चा है—वे ही सत कर्म हैं। त्रेता युग में उनका विस्तार हुआ। तू उत्तम कर्म फल के लिए, उन सत कर्मों को नित्य कर। लोक में उनसे ही सुकृति मिलेगी। उनसे ही, उत्तम कर्म फल की प्राप्ति होगी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्यारे शौनक ! जिस समय हवन को अग्नि खूब प्रज्जवलित हो जाय, जब उसमें ज्वालाएँ उठने लगें—तब घृत को आहुतियाँ देवे। इस प्रकार से प्रातः और सायंकाल दोनों बेला हवन करे। २

प्यारे शौनक ! अग्निहोत्री हवन विधिपूर्वक करे। अग्नि होत्र के साथ-साथ दश कर्म, पौर्णमास कर्म (पौर्ण मासी के दिन होने वाला यज्ञ), चातुर्मास्य कर्म (चौमासे में होने वाला एक वैदिक यज्ञ) और आग्रयण कर्म भी अग्निहोत्री अवश्य करे। अतिथि का आतिथ्य-सत्कार करे। वैश्वदेव कर्म करे। हवन, हवन काल में ही विधि पूर्वक करे। अविधि व अनियम से कदापि न करे। तभी हवन के शुभ फल मिल सकेंगे।

हवन के साथ-साथ होने वाले, उपर्युक्त कर्मों के न करने से एवं अविधि पूर्वक हवन करने से, अच्छे फल के बजाय बुरे फल मिलते हैं। अग्नि होत्री की सात पीढ़ियों—पिता, पितामह और प्रपितामह तथा पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र एवम् स्वयम् अग्निहोत्री—का नाश हो जाता है।" ३

प्यारे मित्र ! निरा अग्नि में घी जलाने से अग्नि होत्र होम सिद्ध न होगा। उसके साथ साथ अन्य शुभ कर्म करने होंगे। हवन विधि पूर्वक करना होगा तभी हवन सिद्ध होगा। तभी शुभ फल दायक होगा।

१—वैश्वदेव–विश्व देव (देवताओं के एक गण जिसमें इन्द्रादि नव देवता माने जाते हैं) के उद्देश्य से किया जाने वाला होम यज्ञ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्यारे मित्र ! आगे विधि पूर्वक किए गए हवन का फल महर्षि अङ्गिरा की वाणी में ही सुनिए :—

"प्रिय शौनक ! हवन में प्रज्ज्वलित अग्नि की लपलपाती सात जिव्हाएँ—काली, कराली, मनोजवा, सुलोहिता, सुधूम्रवर्णा, स्फुलिङ्गिनी और विश्वरुचि देवी हैं। ये घी की आहुती के लिए लपलपाती रहती हैं। जो कोई अग्निहोत्री, हवन में आहुति विधिपूर्वक देता है; एवम् इनके साथ होने वाले उपर्युक्त कर्म—आतिथ्य सत्कारादि—करता है, उसे ये अग्नि की जिव्हाएँ देवलोक में आदरपूर्वक बुला ले जाती हैं। वहाँ वे सूर्य की किरणों की सहायता से पहुँचा देती हैं।"

४, ५, ६

प्यारे मित्र ! उपर्युक्त तीन मंत्रों का तात्पर्य एक मात्र यही है कि विधि पूर्वक हवन करने से एवं उसके साथ-साथ अन्य सुकर्मों के करने से, हवन करने वाला-अग्निहोत्री इन्द्रलोक में जाता है। यही एक बात विस्तार में कही गई है।

यजुर्वेद मे, यज्ञ के अनुष्ठान का विधान है। उसमें यज्ञ में व्यवहार होने वाली समस्त वस्तुओं की प्रार्थना की गई है। उन्हें देव तुल्य माना गया है। इनसे अपने कर्मों के प्रति हृदयता, श्रद्धा आदि का संकेत मिलता है। व्यवहार में आने वाली समस्त वस्तुओं को देव तुल्य मानकर, उनके प्रति सहृदयता बरतने से, उन्हें अच्छी तरह से अच्छी हालत में रखकर, उचित प्रकार से काम में लाने से, वे ज्यादा उपयोगी सिद्ध होंगी। ज्यादा दिन तक काम के योग्य बनी रहेंगी। जो-जो वस्तु नित्य व्यवहार की हैं—उन्हें भली-भाँति रखने से, उचित जगह पर सुव्यवस्थित तरीके से रखने से, अच्छा वातावरण बना रहेगा। फिर भीतर-बाहर शाँति बनी रहेगी। काम में जी लगेगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उपर्युक्त मंत्रों में अग्नि ज्वालाओं को देवी तुल्य माना गया है। वास्तव में, समस्त वस्तुओं में जीव का आभास कर, उनके प्रति सहृदयता बरतने से ही उच्च कोटि की साधना फलवती हो सकेगी। जब इन मंत्रों की रचना हुई थी—तब लोगों का बौद्धिक एवं आध्यात्मिक स्तर बहुत ऊँचा पहुँचा हुआ था। समय के फेर से, उनका ह्रास हुआ है। अब तो अधिकाँश लोगों को ये बातें अटपटी लगने लगी हैं। मुझे खुशी है कि आप का बौद्धिक और आध्यात्मिक स्तर वहाँ तक पहुँच चुका है; जहाँ से ये सारी बातें समझी जा सकती हैं।

प्यारे मित्र ! आगे की वार्ता सुनिए—

महर्षि अङ्गिरा बोले—

"प्रिय शौनक ! सोलह ऋत्विक (यज्ञ करने वाले) और दो—यजमान और यजमान-पत्नी-ये अठारह यज्ञ का अनुष्ठान करते हैं। ये सब के सब नाशवान हैं। अतएव इनके द्वारा होने वाले कर्मों के फल भी नाशवान ही हैं। एक मात्र उन्हीं में आश्रित रहने से, अक्षय सुख की प्राप्ति नहीं होती। यजमान, यजमान-पत्नी को यज्ञ कर्मों के फल स्वरूप स्वर्ग तो मिलता है; किन्तु पुण्य क्षीण होने पर उन्हें पुनः मृत्युलोक में आना पड़ता है। जरा-मृत्यु के दुःसह दुःख सहने पड़ते हैं।" ७

प्यारे मित्र ! स्वर्ग से भी परे मोक्ष है। मोक्ष में ब्रह्म में मिलकर, जीव ब्रह्म बन जाता है। उसे फिर जन्म-मरण के चक्र में पड़ना नहीं पड़ता। स्वर्ग मोक्ष के पहले की उपलब्धि है वहाँ जीव को मनमाना भोग, भोगने को मिलते हैं। किन्तु अपने पुण्य की कमाई भर ही वह वहाँ रह पाता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

है। पुण्य-फल भोग लेने पर, वहाँ से हटना पड़ता है। पुनः जन्मना पड़ता है। इससे साधक को चाहिए कि स्वर्ग सुख से ललचाकर, उसी से सन्तोष न करले, वरन् भगवत् प्राप्ति के लिए प्रयास करे।

इसका मतलब यह नहीं कि यज्ञ कर्म त्याज्य है। आशय यह है कि यज्ञ कर्म के फल में साधक आसक्त न होवे। प्रयास में रुके नहीं। अभीष्ट भगवत् प्राप्ति का रखे और उसके लिए यावत जीवन प्रयास करे। सारे यज्ञ कर्म भगवत् प्राप्ति के पथ प्रशस्त करते हैं। आगे की वार्ता महर्षि अङ्गिरा की वाणी में सुनिए :—

महर्षि अङ्गिरा आगे बोले—

"प्रिय शौनक ! अविद्या में पड़े रहने के कारण, जो लोग, स्वर्ग को ही सर्वोपरि समझते हैं; उससे ही संतुष्ट हो जाते हैं; अपने को कृतार्थ हो गया बूझते हैं—ऐसे मूढ़ जरा-मरण के दुःख को नहीं तर पाते। अविद्यावश ऐसे लोग अपने को ही पण्डित बूझते हैं। अपने को ही ज्ञानी मानते हैं। जैसे अँधे को अँधा ही राह दिखाने वाला होने से, बेचारा अँधा भटकता ही फिरता है; वैसे ही, ऐसे मूढ़ जन जीवन भर भ्रमित ही रह जाते हैं। जरा-मरण के दुःख को तर नहीं पाते। ८, ९

प्यारे वत्स ! जिन यज्ञादि पुनीत कर्मों की चर्चा वेद में है; एव जिन परहित छोटे-बड़े जलाशय, कुंवे आदि खुदवाने का विधान स्मृति शास्त्रों में है; एक मात्र उनको ही सर्वोत्तम समझने वाले मूढ़जन इनके कर्म फल स्वरूप स्वर्ग तो पा लेते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हैं; किन्तु पुण्य क्षीण होने पर उन्हें मृत्यु लोक अथवा उससे भी निकृष्ट लोक में जन्म लेना पड़ता है। १०

प्यारे वत्स ! जो ज्ञानी जन, विधिवत जीवन यापन करते हैं; गृहस्थाश्रम के बाद वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम में प्रवेश करते, धीरे-धीरे घर-बार छोड़ कर संन्यास आश्रम में वन में जा वास करते हैं; अपने लिए कुछ संचय न किए रहने के कारण भिक्षाटन पर ही जीवन निर्वाह करते हैं; तप करते हैं तथा शास्त्रादि एवं बड़ों में श्रद्धा-भक्ति रखते हैं— उनके समस्त पाप धुल जाते हैं। वे मर कर उत्तरायण मार्ग से दिव्य लोक को जाते हैं। वह दिव्य लोक स्वर्ग से परे और श्रेष्ठ है। जब तक संसार कायम रहता है; ब्रह्मा उस लोक में वास करते हैं।" ११

प्यारे मित्र ! कोई-कोई दिव्य लोक की प्राप्ति को ही मोक्ष समझते हैं। किन्तु दिव्य लोक का वासी, ब्रह्म में मिल कर, ब्रह्म नहीं बनता है। जन्म-मरण नहीं तर पाता।

प्यारे मित्र ! मकर संक्राति से छ महीने तक सूर्य उत्तर दिशा में चले जाते हैं। यानी उत्तर दिशा में उगते हैं। तब उत्तरायण कहलाते हैं। और छः महीने दक्षिण दिशा में चले जाते हैं। तब दक्षिणायण कहलाते हैं। गीता में कहा गया है कि जब छह महीने सूर्य उत्तरायण रहते हैं, तब शुक्ल पक्ष के दिन में जब अग्नि जलती रही हो, मरने से ब्रह्म ज्ञानी ब्रह्म को प्राप्त होकर पुनर्जन्म से मुक्त हो जाता है। उपर्युक्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्लोक में उत्तरायण मार्ग से दिव्य लोक में जाने का संकेत इसी से है।

महर्षि अङ्गिरा आगे बोले—

"प्यारे वत्स ! संसार अनित्य (नश्वर) है। यहाँ के कर्म अनित्य हैं। उनके फल अनित्य हैं। साधक को चाहिए कि वह अपने नियत कर्मों को यज्ञ रूप करता जाय। फल स्वरूप प्राप्त स्वर्गादि लोकों को त्यागता जाय। और अन्त में, हाथ में समिधा (हवन की लकड़ी) लेकर ब्रह्म ज्ञानी गुरु के पास उस नित्य ब्रह्म की जानकारी के लिए, उपदेश लेने जाय।" १२

प्यारे मित्र ! प्राचीन काल में, ब्रह्मज्ञानी ऋषि-मुनि जंगल में आश्रम बना कर रहा करते थे। ब्रह्म विद्या का अभिलाषी उनके पास हाथ में हवन की लकड़ी का बण्डल लेकर शिष्य रूप में उपदेश के लिए विनीत भाव से जाता। उसे योग्य अधिकारी पाने पर, वे ब्रह्म विद्या का उपदेश देते थे। निः शुल्क उपदेश देते। समिधा (हवन की लकड़ी) तो शिष्य गण, जंगल से ही चुन लेते।

प्यारे मित्र ! प्रसंग वश महर्षि अङ्गिरा कहते हैं कि ऐसे शांत चित, जितेन्द्रिय शिष्य को वह ब्रह्म ज्ञानी गुरु ब्रह्म तत्व का उपदेश देकर ब्रह्म की जानकारी करावे। १३

प्यारे मित्र। परा विद्या ब्रह्म तत्व का ही उपदेश देती है। हम आप, स्वयम् विचारें कि हम-आप इस परा विद्या के अधिकारी हैं या नहीं। देखें मन शांत भी हुआ ! इन्द्रियाँ वश में भी हुईं ! नहीं तो सतत् साधना द्वारा मन को शाँत करें। चंचल इन्द्रियों को वश में करें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फिर परा विद्या की चर्चा करें। कहें—सुनें। ऐसे जानकारी भर के लिए ही कहने-सुनने से भला क्या लाभ होगा ! समय वृथा ही जायगा। परिश्रम निष्फल ही होगा।

प्यारे मित्र ! खण्ड दो की चर्चा समाप्त हुई। अगले पत्र, में द्वितीय मुण्डक के खण्ड एक की चर्चा की जाएगी। तब तक के लिए विदा लेता हूँ।

आप को अनन्त शुभ कामनाओं के साथ पुनः प्रणाम।

आपका आत्मरूप

गणेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुण्डक २ : खण्ड १

जमशेदपुर
१५-५-५९

प्रिय मित्र !

सादर प्रणाम !

पिछले पत्र में, प्रथम मुण्डक की चार्चा हो चुकी है। उसमें, अपरा विद्या की उपलब्धियों की चर्चा हुई है। मुण्डक दो में, परा विद्या की चर्चा प्रारम्भ की जाती है।

महार्षि अङ्गिरा शौनक से बोले—

"प्यारे वत्स ! एक मात्र ब्रह्म ही सत्य है। वही सदा एक सा रहने वाला—नित्य है। जैसे प्रज्वलित अग्नि शिखा से अनेक चिनगारियाँ निकल जाती है, वैसे ही उस ब्रह्म से अनेक जीव निकलते हैं और उस में ही पुनः लीन हो जाते हैं।

प्यारे वत्स ! वह ब्रह्म, निश्चय ही, स्वयम् प्रकाशित है। अलौकिक है। सर्व व्यापी है। अजन्मा है। उसके जन्म का कोई निमित् नहीं है। उसमें कोई प्राण नहीं है। वह मनोहीन (मन से रहित) है। विशुद्ध है।

प्यारे वत्स ! उस ब्रह्म से ही प्राण उत्पन्न हुए। उससे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ही, मन, इन्द्रियाँ, आकाश, वायु, तेज, जल और सारे विश्व को धारण करने वाली पृथ्वी भी उसी से उत्पन्न है। ३

प्यारे वत्स ! सभी जीवों की अन्तरात्मा ब्रह्म ही है। द्युलोक (स्वर्ग लोक) ही उस ब्रह्म का शिर है। चन्द्रमा और सूर्य ही उसके नेत्र हैं। दिशाएँ ही उसके कान हैं। प्रसिद्ध वेद ही उसके वचन हैं। सारा विश्व ही उसका हृदय है। पृथ्वी उसके चरण से ही उत्पन्न हुई है। ४

प्यारे वत्स ! सूर्य ही जिसकी समिधा (ईंधन) है, वह अग्नि उस ब्रह्म से ही उत्पन्न होती है। अग्नि से मेघ उत्पन्न होता है। मेघ से पृथ्वी तल पर औषधियाँ उत्पन्न होती हैं। औषधियों से वीर्य उत्पन्न होता है। उस वीर्य को पुरुष, स्त्री में सींचता है ; जिससे सारी प्रजा उत्पन्न होती है। ५

प्यारे वत्स ! गायत्री आदि मंत्र, साम, यजुः दीक्षा (मौञ्जी बंधन आदि) सम्पूर्ण यज्ञ क्रतु दक्षिणा (एक गौ से लेकर सर्वस्व दान पर्यन्त) संवत्सर, यजमान लोक और जहाँ तक सूर्य तपता व जहाँ तक चन्द्र-कलियाँ पवित्र करती हैं, वे सब लोक उस ब्रह्म से ही उत्पन्न हैं। ६

प्यारे वत्स ! बहुत से देवता उस ब्रह्म से ही उत्पन्न हुए साध्यगण (देवताओं की जाति विशेष) मनुष्य, पशु, पक्षी,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्राण अपान (श्वास-उच्छास) व्रीहि, यव, तप, श्रद्धा, सत्य, ब्रह्मचर्य, और ब्रह्मचर्य विधि आदि सब के सब उस ब्रह्म से ही उत्पन्न हैं। ७

प्यारे वत्स ! दो नेत्र, दो कान, नाक के दो छिद्र और एक जीभ—ये सात इन्द्रियाँ मस्तक के प्राण रूप उस ब्रह्म से ही उत्पन्न हैं। अपने-अपने विषयों को प्रकाशित करने वाली उनकी सात दीप्तियाँ, सात समिधा (विषय), सात होम, (विषय-ज्ञान) तथा सात इन्द्रिय स्थान, जिनमें ये प्राण संचार करते हैं; सब के सब, ये सात-सात सभी जीवों में स्थापित उस ब्रह्म से ही उत्पन्न हैं। ८

प्यारे वत्स ! समस्त समुद्र और पर्वत उस ब्रह्म से ही उत्पन्न हैं। उसी से विविध रूपों वाली नदियाँ प्रवाहित होती हैं। उस ब्रह्म से ही सभी औषधियाँ उत्पन्न होती हैं। उससे ही मधुरादि छह प्रकार के रस उत्पन्न हुए हैं, उस रस से ही जीवधारियों में परिवेष्ठित (स्थापित) अन्तरात्मा स्थित है। ९

प्यारे मित्र ! हमारा सूक्ष्म शरीर, शरीर और आत्मा के मध्य में, आत्मा की तरह स्थित है; इसी लिए अन्तरात्मा कहलाता है।

प्यारे मित्र ! शरीर दो है—एक हमारा स्थूल शरीर जो नश्वर है और एक लिंग शरीर यानी सूक्ष्म शरीर। यह देखने में नहीं आता—क्योंकि अशरीरी है। लिङ्ग देह (सूक्ष्म शरीर) उस स्थूल शरीर के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नष्ट होने पर भी अपने किये हुए कर्मों का फल भोगने के लिये जीवात्मा के साथ लगा रहता है।

महर्षि अङ्गिरा आगे बोले—

"प्यारे वत्स ! ब्रह्म ही सारा जगत है। उससे परे कुछ नहीं है। वही कर्म है। वही तप है। वही ज्ञान है। उस ब्रह्म को जीवों के अन्तःकरण में स्थित देखने वाला अपनी अविद्या-ग्रन्थि (गाँठ) को काट डालता है। १०

प्यारे मित्र ! आत्मा चेतन है। देह अचेतन (जड़) है। जड़ और चेतन का एकत्व हो नहीं सकता। किन्तु अविद्यावश आत्मा और देह एक भासती है। यही अविद्या-ग्रंथी है। इस अविद्या-ग्रंथी के कारण जीव को अपने को शरीर से अलग आत्मा होने का भान नहीं होता। वह शरीर से नाता नहीं तोड़ पाता। जिसे ब्रह्म का ज्ञान हो जाता है; वह अपने को देह से परे आत्मा पाता है। फिर शरीर के सुख-दुःख उसे नहीं व्यापते। उसकी अविद्या-ग्रंथी कट जाती है।

मित्र ! अविद्या-ग्रंथी ही हृदय-ग्रंथी भी कहलाती है। इसका शब्दार्थ भ्रमात्म ज्ञान; संशय-भ्रम है।

प्यारे मित्र ! ब्रह्म ही ज्ञान है। फिर उस एक को जान लेने से, सब का ज्ञान हो जाता है। कुछ जानना शेष नहीं रह जाता है।

प्यारे मित्र ! मुण्डक दो के प्रथम खण्ड की चर्चा समाप्त हुई। अगले पत्र में, खण्ड दो की चार्चा की जाएगी।

आइए, ईश वन्दना कर विदा होवें:—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ईश-अन्वेषण

मैं ढूँढ़ता तुझे था, जब कुंज और वन में।
तू खोजता मुझे था, तब दीन के वतन में॥
तू आह बन किसी की मुझको पुकारता था।
मैं था तुझे बुलाता संगीत में भजन में॥
मेरे लिये खड़ा था दुखियों के द्वार पर तू।
मैं बाट जोहता था तेरी किसी चमन में॥
बन कर किसी के आँसू मेरे लिए बहा तू।
मैं देखता तुझे था आनन्द के सदन में॥
दुःख में रुला-रुला कर तूने मुझे चिताया।
मैं मस्त हो रहा था, तब हाय अंजुमन में॥
बाजे बजा-बजाकर, मैं था तुझे रिझाता।
तब तू लगा हुआ था, पतितों के संगठन में॥
तू बीच में खड़ा था, बेबस गिरे हुओं के।
मैं स्वर्ग देखता था, झुकता कहाँ चरण में॥
तूने दिये अनेकों अवसर न मिल सका मैं।
तू कर्म में मगन था, मैं व्यस्त था कथन में॥
कैसे तुझे मिलूँगा, जब भेद इस कदर है।
हैरान होके भगवन् आया हूँ मैं शरण में॥
कठिनाइयों दुखों का इतिहास ही सुयश है।
मुझको समर्थ कर तू, बस कष्ट के सहन में॥
दुःख में न हार मानूँ, सुख में तुझे न भूलूँ।
ऐसा प्रभाव भर दे, मेरे अधीर मन में॥

प्यारे मित्र! जहाँ तक बन सके, तन-मन-धन से दीन-दुखियों के काम आवें। इसमें ही जीवन की सार्थकता है।

अनन्त शुभ कामनाओं के साथ
आप को पुनः प्रणाम

आपका आत्मरूप
गणेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुण्डक २ : खण्ड २

प्रिय मित्र !

सादर प्रणाम ।

जमशेदपुर
१६-५-६९

पिछले पत्र में मुण्डक दो के प्रथम खण्ड की चर्चा हो चुकी है। ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन हुआ है। वह बिना रूप का है; फिर भी उसके जानने की विधि खण्ड दो में बतलाई जाती है।

महर्षि अङ्गिरा शौनक जी से बोले—

"प्रिय वत्स ! ब्रह्म प्रकाश स्वरूप है। वह सब के हृदय में वास करता है। वह सब कुछ देखता सुनता और जानता रहता है। उससे कोई बात छिपी नहीं रहती। वह सब से बड़ा है; और सब में विराजमान है। चलने-फिरने-उड़ने वाले पक्षी आदि जीव, प्राणन करने वाले मनुष्य, पशु आदि तथा निमेषोन्मेष करने वाले सब के सब उस ब्रह्म में ही समर्पित हैं। उसमें ही समाये हुए हैं। तू उस ब्रह्म को जानो ! समझो !! वह सदा सत्य स्वरूप तेरी आत्मा है। वही सबका प्रार्थनीय है। वह ब्रह्म प्रजाओं के (लौकिक) विज्ञान से परे है। सब दोषों से रहित तुम उसे ही सर्वश्रेष्ठ जानो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्यारे वत्स ! ब्रह्म स्वयं दीप्तिमान है। उसकी दीप्ति से ही, सूर्य आदि दीप्तिमान होते हैं। वह अणु से भी सूक्ष्म है। फिर भी संपूर्ण लोक और उसके वासी, उसी में स्थित हैं। वही प्राण है। वही वाणी है। वही मन है। वही सत्य और अविनाशी है। हे वत्स ! तू उस ब्रह्म में चित्त को लगा। उसमें ही मन को पिरो ! उसे बेंध। २

प्यारे वत्स ! उपनिषदों में वर्णित महान अस्त्र रूप अनुष लेकर उपासना (पूजा आराधना) द्वारा तीक्ष्ण किया हुआ वाण चढ़ाओ और उसे खींचकर ब्रह्म भावानुगत चित्त से उसे (ब्रह्म को) लक्ष्य कर बेंधन करो। अर्थात् उपासनादि सतत् साधना से मन, समस्त इन्द्रियों एवं अन्तःकरण को विषयों से हटाकर, सात्विक भावना से चित्त को उसब्रह्म में स्थिर करो।" ३

प्यारे मित्र ! वाण लक्ष्य वस्तु में प्रवेश कर जाता है। खींचने से भी नही निकलता। यहाँ ब्रह्म को बेंधने से तात्पर्य है कि मन को ब्रह्म में, इस प्रकार से स्थिर किया जाय कि फिर वहाँ से हटे ही नहीं।

महर्षि अङ्गिरा आगे बोले—

"प्यारे वत्स ! प्रणव (ओङ्कार) धनुष है। आत्मा वाण है, और ब्रह्म उसका लक्ष्य है। पूरी तत्परता और सावधानी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से बेंधन करना चाहिए। अर्थात् ओङ्कार के जपादि से मन को ब्रह्म में वैसे ही प्रवेश करावे जैसे तीर अपने लक्ष्य में प्रवेश करता है। उसे ब्रह्म में दृढ़वत् स्थिर कर दे ताकि वहाँ से हटने न पावे। ४

प्यारे वत्स ! जिस आत्मा (ब्रह्म) में द्यु लोक (स्वर्ग) पृथ्वी, अन्तरिक्ष और समस्त इन्द्रियों सहित मन समाये हुए है, उस एक आत्मा को ही तुम जानो। अन्य बातों को छोड़ दो। बस, मुक्ति का एक मात्र यही सुगम राह है।" ५

प्यारे मित्र ! आत्मा कहीं-कहीं ब्रह्म के अर्थ में व्यवहृत होती है तो कहीं-कहीं जीव और लिङ्ग, देह के अर्थ में। जहाँ जो उपयुक्त होता है; वहाँ वही अर्थ लगाया जाता है। यहाँ ब्रह्म के अर्थ में व्यवहृत हुई है।

महर्षि अङ्गिरा आगे बोले—

"प्यारे वत्स ! रथ-चक्र की नाभि में, जिस तरह अरे लगे रहते हैं, उसी तरह हृदय के भीतर शरीर की संपूर्ण नाड़ियाँ मिलती हैं। उस हृदय के भीतर यह आत्मा निरंतर वर्त्तमान है, और सब कुछ देखता, सुनता मनन एवं संचार करता रहता है। वत्स ! तू ॐ का आलम्बन बनाकर, उस आत्मा का ध्यान करो ! भगवान करें, तुम निर्विघ्न अज्ञान को तर जाओ !" ६

प्यारे मित्र ! यहाँ महर्षि अङ्गिरा शिष्य शौनक जी को भगवत्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्राप्ति का मार्ग दिखाकर, आशिष देते हुए साधना में लगे रहने को कहते हैं।

प्यारे मित्र ! ॐ भगवान का पवित्र नाम है। उन्हीं का प्रतीक है। ॐ जाप की महिमा भारी है। इसी लिए ॐ का आलम्बन यानी जाप करने को कहा गया है।

महर्षि अङ्गिरा आगे बोले—

"प्रिय वत्स ! वह ब्रह्म सब कुछ जानने वाला है। वह सर्वत्र है। उसकी महिमा अपार है। द्युलोक (स्वर्ग) और पृथ्वी उसकी महिमा से यथास्थान स्थिर है। उसकी महिमा से ही प्रकृति का हर काम नियत समय पर अटल रूप से चला करता है। नियम का उल्लंघन नहीं होता। वही प्राण और सूक्ष्म शरीर को एक देह से दूसरी देह में ले जाने वाला है। वही ब्रह्म अन्नमय देह के हृदयाकाश (जिसे ब्रह्मपुर कहते हैं) विराजमान है। वह मनोमय है; यानी मन से ही अनुभव किये जाने वाला है।

विवेकी पुरुष को शास्त्र और आचार्य के उपदेश से तथा ध्यानादि साधना से प्राप्त ज्ञान रोशनी में सर्वत्र उस आत्म-तत्व से परिपूर्ण भासता है। आनन्द स्वरूप अमृत ब्रह्म सर्वत्र प्रकाशित भासता है। उस साधक को वह ब्रह्म विशेष रूप से अपने अन्तःकरण में ही निरन्तर विराजमान भासता है।"७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्यारे मित्र ! वास्तव में ब्रह्म तो सर्वत्र है । सब उसी का ही विस्तार है । फिर भी साधना की सुविधा के लिए उसे हृदय में विशेष रूप से विराजमान मान लिया जाता है । इससे उन्हें हृदय में ही लक्ष्य कर ध्यान करने में आसानी होती है ।

महर्षि अङ्गिरा आगे बोले—

"प्रिय वत्स ! उस ब्रह्म का साक्षात्कार कर लेने पर, साधक की हृदय-ग्रंथी खुल जाती है—यानी अविद्या, मोह, भ्रम आदि दूर हो जाते हैं । उसके कर्मफल क्षीण हो जाते हैं । फलतः वह जन्म-मरण को तर जाता है । उसे मुक्ति मिल जाती है । ८

प्यारे वत्स ! वह ब्रह्म निर्मल है । कलाहीन है । ज्योतिर्मय परमकोश में विराज मान है । वह शुद्ध है । सम्पूर्ण ज्योतिर्मय पदार्थों की ज्योति है । इसलिए, ऐसे विलक्षण ब्रह्म को ब्रह्मज्ञानी ही जान पाते हैं ।" ९

प्यारे मित्र ! जिसकी बुद्धि जहाँ तक जा पाती है : वह वहाँ तक ब्रह्म के विषय में भाँति-भाँति से कल्पना करता है । वास्तव में भगवान अवर्णनीय हैं । अथाह हैं । सिद्ध पुरुष ही उन्हें अनुभव से जान पाते हैं ।

प्यारे मित्र ! सूर्य, चन्द्रादि में कला होती है । किन्तु ज्योति-पुञ्ज ब्रह्म में कोई भी कला नहीं होती । इसलिए वह कलाहीन यानी निष्कल कहलाता है । वह शुद्ध सात्विक तीक्ष्ण बुद्धि द्वारा ही जाना जा सकता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है। इस लिए कहा जाता है कि वह ज्योतिर्मय कोश (अण्डा) के भीतर रहता है। सहज में उसे कोई जान नहीं पाता।

महर्षि अङ्गिरा आगे बोले—

"प्यारे वत्स ! वह ब्रह्म प्रकाश पुञ्ज है। उसके प्रकाश से ही विश्व प्रकाशित है। सूर्य-चन्द्र-अग्नि सबके सब उसके प्रकाश से ही प्रकाशित हैं। ब्रह्म में न सूर्य प्रकाशता, न चन्द्रमा, न तारे ही। न बिजली ही चमक पाती। फिर इस अग्नि का क्या विसात ! वहाँ यह क्या प्रकाश पाएगी ! १०

प्यारे वत्स ! आगे-पीछे, दायें-बायें, ऊपर-नीचे सब ओर सब ठौर, उस ब्रह्म का ही विस्तार है। अपितु यह सारा जगत ब्रह्म है।" ११

प्यारे मित्र ! द्वितीय मुण्डक के खण्ड दो की भी चर्चा समाप्त हुई। ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन हुआ। उसे जानने की विधि बतलाई गई। अगले पत्र में मुण्डक तीन की चर्चा की जाएगी।

आइए, ईश वन्दना गाकर विदा होवें—

पितु मातु सहायक स्वामि सखा, तुम ही इक नाथ हमारे हौ।
जिनके कछु और अधार नहीं, तिनके तुम्ह ही रखवारे हौ।
सब भाँति सदा सुखदायक हो दुख दुर्गुन नासन हारे हौ।
प्रतिपाल करो सगरे जग ही अति सै करुना उर धारे हौ।
भूलि हैं हम ही तुम को, तुम सौ हमरी सुधि नाहिं विसारे हौ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उपकारन को कछु अंत नहीं, छिन ही छिन जो विस्तारे हौ।
महराज महा महिमा तुम्हरी समुझै विरले बुधिवारे हौ।
शुभ शान्ति निकेतन प्रेम निधे ! मन मन्दिर के उजियारे हौ।
यहि जीवन के तुम जीवन हौ इन प्रानन के तुम प्यारे हौ।
तुम सों प्रभु पाय "प्रताप हरि" केहि के अब और सहारे हौ ?

प्यारे मित्र ! अब विदा लेता हूँ। आप को अनन्त शुभ कामनाओं के साथ पुनः प्रणाम् !

आपका आत्मरूप
गणेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुण्डक ३ : खण्ड १

जमशेदपुर
१५-५-६९

प्रिय मित्र !

सादर प्रणाम ।

पिछले पत्र में मुण्डक दो की चर्चा हो चुकी है। मुण्डक तीन की प्रारम्भ की जाती है :—

महर्षि अङ्गिरा श्री शौनक जी से आगे बोले—

"प्रिय वत्स ! हमारे शरीर रूपी वृक्ष पर एक ही आख्यान वाले जीव और ईश्वर रूप में दो पक्षी साथ-साथ बसेरा करते हैं। उनमें जीव रूपी पंछी मधुर कर्म-फलों को भोगता है; और ईश्वर रूपी पक्षी एकमात्र देखता भर है।" १

प्यारे मित्र ! हमारे शरीर में ईश्वर और जीव दोनों का निवास है। ईश्वर सिर्फ देखता भर है। जीव अच्छे बुरे कर्मों के फल को भोगता है।

महर्षि अङ्गिरा आगे बोले—

प्यारे वत्स ! देह रूपी वृक्ष पर ईश्वर के साथ ही रहने वाला जीव, अपने-पराये के मोह में पड़कर शोक सागर में डूबा रहता है। जब वह ध्यान द्वारा अपने से विलक्षण, एवं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

योगियों द्वारा सेवित परमात्मा तथा उसकी महिमा को जान जाता है, तब वह मोह-माया से विलग हो शोक-सागर को तर जाता है। आनन्द में निमग्न रहने लगता है। २

प्यारे वत्स ! ईश्वर ब्रह्मा का भी उत्पत्ति स्थान है। जगत का वही कर्त्ता है। उस ईश्वर का साक्षात्कार कर साधक पाप-पुण्य दोनों को तर जाता है। उसकी काया निर्मल हो जाती है। वह अत्यन्त समता को प्राप्त कर लेता है। ३

प्यारे वत्स ! ईश्वर ही समस्त जीवों के प्राणों का प्राण है। वही सबमें विराजमान है। उसे जानकर विद्वान साधक सब कुछ जान जाता है। ईश्वर ही सब कुछ है। वही ज्ञान है। इसका उस साधक को प्रत्यक्ष रूप में भान हो जाता है। फिर उसके लिए, कुछ बोलने का विषय नहीं रह जाता। तब उसकी दृष्टि में, आत्मा से भिन्न कोई वस्तु नहीं दीखती। आत्मा से परे न उसे कुछ सुनने में आता, न देखने में आता, न कुछ प्रतीत ही होता। फिर बोले तो क्या बोले ! तब वह सांसारिक पदार्थों व अपने लोगों में क्रीड़ा न कर, आत्मा में ही क्रीड़ा करता है। वह आत्मा में ही रमण करता है। उसे क्रीड़ा-रमण आदि के लिए अन्य साधन की आवश्यकता नहीं होती। वह सब कुछ आत्मा में ही पाता है। उसी में विभोर रहता है। ४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्यारे वत्स ! सत्य भाषी ही विजयी होता है। मिथ्या-भाषी कदापि विजयी नहीं होता। सत्य से देवयान मार्ग का विस्तार होता है। उस मार्ग से चल कर योगी, तृष्णा रहित हो, उस पद को प्राप्त करता है, जहाँ सत्य ही सत्य है। सत्य का ही भंडार है। अर्थात् वह योगी ब्रह्म में विचरता है। ५

प्यारे वत्स ! सत्य से प्राप्त होने वाला, वह ब्रह्म, सर्वत्र व्याप्त है। वह महान है। वह दिव्य है। वह इन्द्रियों द्वारा जाना नहीं जा सकता। वह इनकी पहुँच से परे है। वह पास भी है। यहाँ तक हृदय में ही वास करता है। और दूर से भी दूर है। सूक्ष्म से सूक्ष्म है। वह प्राणियों की बुद्धि रूपी गुहा में छिपा रहता है। ज्ञानी जन ही उसे जान पाते हैं। अज्ञानी नहीं जान पाते। ६

प्यारे मित्र ! बुद्धि रूपी गुहा में आत्मा छिपी रहती है-से तात्पर्य है कि शुद्ध सात्विक तीक्ष्ण बुद्धि वाले सिद्ध योगी को ही आत्मा की जानकारी रहती है। औरों की बुद्धि की पहुँच आत्मा तक नहीं होती।

महर्षि अङ्गिरा आगे बोले—

प्यारे वत्स ! यह आत्मा नेत्र से देखी नहीं जा सकती। वाणी से बखानी नहीं जा सकती। किन्हीं भी इन्द्रियों से जानी नहीं जा सकती। उनके द्वारा ग्रहण नहीं की जा सकती। यह न तप से और न अग्नि होत्रादि वैदिक कर्मों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के अनुष्ठान से ही ग्रहण की जा सकती। अर्थात् इनमें से किसी के द्वारा भी उसकी जानकारी नहीं प्राप्त होती। ७

प्यारे वत्स ! जब राग, द्वेष, मद, लोभ कामादि मन के मल धुल जाने से चित्त स्वच्छ और शांत हो जाता है, तब उसमें, आपसे आप ज्ञान का उदय होता है। ज्ञान के उदय होने पर योगी उस ब्रह्म का साक्षात्कार कर पाता है। ८

प्यारे वत्स ! हमारे जिस शरीर में, प्राण, अदान, उदान, व्यान और समान ये पाँच प्रकार की प्राण वायु प्रविष्ट हैं; वह सूक्ष्म से सूक्ष्म आत्मा उसी में ज्ञान द्वारा जाना जा सकता है। वह समस्त प्राणियों के चित्त में व्याप्त है। चित्त के शुद्ध हो जाने पर, आत्मा स्वयं प्रकाशित होने लगती हैं। फिर तो आत्मा अपना साक्षात्कार आप कराती है। ९

प्यारे मित्र ! आत्मा के दर्शन का साधन चित्त की शुद्धि है। हमारा चित्त स्वभाव से दर्पण-सा निर्मल है। वह शांत जल की तरह स्वच्छ है। किन्तु इस पर राग, द्वेष, मद, लोभ. काम, क्रोधादि मल जम गए हैं। इन मलों से चित्त में व्याप्त आत्मा ढक गई है। इन मलों के दूर होते ही वह आत्मा स्वयम् चित्त को प्रकाशित कर देती है। आत्मा का चित्त पर प्रकाशित होना ही, आत्मा का साक्षात्कार है।

प्यारे मित्र ! मन के मल दूर करें। ईर्ष्या, द्वेष, मद, लोभ, काम, क्रोधादि को वहरावें। चित्त को निर्मल करें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्यारे मित्र ! चित्त, निरा कहने-सुनने व मनसूबे बाँधने भर से साफ न होगा। ईर्ष्या, द्वेष, मद, लोभ, काम, क्रोधादि विकार सहज में दूर न होंगे। इसके लिए, सतत् प्रयत्न करना होगा। साधना शुरू से ही करनी होगी। पहले खान-पान को ठीक करना होगा। शुद्ध सात्विक भोजन करना होगा। नियमित जीवन विताना होगा। हरि का नाम लेना होगा। विषय वासनाओं की ओर जाते मन को प्रवीधना होगा। रोकना होगा। न सफलता में इठलाना होगा न विफलता में बिलखना होगा। दिल तोड़ न बैठना होगा। वरन् मन को वश में करने के प्रयास में लगा रहना होगा। साधना में एक-सा तत्पर रहना होगा।

मित्र ! धीरे-धीरे, भीतर ही भीतर, जग से नाता तोड़ना होगा। माया-मोह छोड़ना होगा। जग से नाता तोड़ आत्मा से जोड़ना होगा।

प्यारे मित्र ! मुझे खुशी है कि उपर्युक्त प्रारम्भिक साधनों को आप ने जीवन में उतार लिया है। आप की साधना दूर तक पहुँच चुकी है। आप के चित के मल दूर हो गए हैं। जरा-जरा छिटें रह गए हों तो साधना में जरा और तत्पर हो उन्हें भी धोही डालिए। चित्त को विशुद्ध बनाही डालिए। फिर तो आप की भी जीवनी संत समागम नामक रचना में जुड़ ही जाएगी। मुझे घर बैठे लखने के लिये एक जीवनी मिल जायगी नित्य आप, संत के दर्शन भी होते रहेंगे। दर्शन से मेरा भी जीवन सफल हो जायेगा। भगवान करें—आपकी साधना शीघ्राति-शीघ्र फलवती होवे।

अब विषय प्रसंग पर आवें:—

महर्षि अङ्गिरा शौनक जी से आगे बोले—

प्रिय वत्स ! जिस योगी का चित्त बिलकुल विशुद्ध हो जाता है; उसे ध्यान द्वारा आत्मा का साक्षात्कार हो जाता है। उस योगी को अलौकिक शक्ति प्राप्त हो जाती है। फिर,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वह जिन-जिन लोकों और भोगों के लिए संकल्प करता है, वे-वे तुरंत उसके लिए एवं औरों के लिए उपलब्ध हो जाते हैं। उसके चाहने मात्र से ही सब कुछ सुलभ हो जाता है। इसलिए वत्स ! ऐश्वर्य (धन-दौलत) के इच्छुक प्राणी ऐसे आत्म-ज्ञानी की पूजा करें। वह आत्मज्ञानी उसे ऐश्वर्य प्राप्त करा देगा। १०

प्यारे मित्र ! मुण्डक तीन के प्रथम खण्ड की चर्चा समाप्त हुई। अगले पत्र में खण्ड दो की जाएगी। तब तक के लिए विदा लेता हूँ।

अनन्त शुभ कामनाओं के साथ आप को पुनः प्रणाम !

आपका आत्मरूप

गणेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुण्डक ३ : खण्ड २

जमशेदपुर
१७-५-६९

प्रिय मित्र !

शादर प्रणाम ।

पिछले पत्र में मुण्डक तीन के प्रथम खण्ड की चर्चा हो चुकी है। आज अन्तिम खण्ड २ की बारी है।

आगे आत्मज्ञानी की पूजा का फल सुनिये—

महर्षि अङ्गिरा शौनक जी से बोले—

प्यारे वत्स ! जिस ब्रह्म में, यह सारा विश्व अर्पित है; जो अपने तेज से शुद्ध स्वरूप में स्वयम् भास रहा है; ऐसे विलक्षण ब्रह्म को वह आत्मज्ञानी जानता है। ऐसे आत्म ज्ञानी को जो लोग निःस्वार्थ भाव एवं श्रद्धा-भक्ति से पूजते हैं; वे जन्म-मरण को तर जाते हैं। १

प्यारे मित्र ! उपासना निष्काम भाव से होनी चाहिए । किसी वस्तु की प्राप्ति के लिए की गई उपासना मुक्ति नहीं दिला सकेगी। सकल तृष्णा छोड़नी होगी।

महर्षि अङ्गिरा आगे बोले—

प्रिय वत्स ! जो प्राणी भोगों के गुणों का चिन्तन-मनन करता हुआ, उनकी कामना करता रहता है, वह अपनी कामना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के अनुसार भोगों की प्राप्ति-स्थानों में जन्मता रहता है। भोगों की इच्छा बनी रहने के कारण उसे मुक्ति नहीं मिल पाती। वत्स ! जिस साधक ने भोगों को त्याज्य समझ कर, त्याग दिया है; ज्ञान से ही पूर्ण काम हो कृत्य-कृत्य हो गया है; उसकी सारी कामनाएँ इस लोक में ही विलीन हो जाती हैं। २

प्यारे वत्स ! यह आत्मा, वेद शास्त्रादि, धर्म ग्रंथों के पठन-पाठन रूप प्रवचन से प्राप्त नहीं होती। यह ग्रंथों के अर्थ को धारण करने की शक्ति एवं शास्त्र के वचनों को बहुत सुनने से भी नहीं प्राप्त होती। वरन् साधक जिस परमात्मा को पाने की इच्छा करता है, वह परमात्मा स्वयं ही अपने आपको प्राप्त करा देता है। अपनी झलक साधक को दे देता है। ३

प्यारे वत्स ! यह आत्मा बलहीन साधक को प्राप्त नहीं होती। पुत्र-कलत्र धन-दौलत के कारण होने वाले प्रमाद (भ्रांति) के कारण भी प्राप्त नहीं होती। तृष्णा को निर्मूल किए बिना तपस्या से भी नहीं मिल पाती। जो साधक बल अप्रमाद (असावधानी) सन्यास और ज्ञान से उसकी प्राप्ति के लिए प्रयास करते हैं, उन्हें उस आत्मा का साक्षात्कार हो जाता है। उस साधक की आत्मा ब्रह्मधाम में प्रविष्ट हो जाती है। ४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्यारे मित्र ! कोई-कोई ब्रह्मधाम की प्राप्ति ही ब्रह्म की प्राप्ति मानते हैं। और कोई-कोई ब्रह्म को ब्रह्म-धाम का वासी न मान कर उससे परे मानते हैं।

महर्षि अङ्गिरा आगे बोले—

प्यारे वत्स ! इस आत्मा का साक्षात्कार कर योगीजन ज्ञान-तृप्त हो जाते हैं। उनके ज्ञान की भूख मिट जाती है। वे कृत्य-कृत्य हो प्रसन्न हो जाते हैं। ऐसे धीर प्राणी सर्व व्यापक ब्रह्म को सब ओर सर्वत्र पाते हैं। वे शरीर त्यागते समय समाहित हो, ब्रह्म में प्रवेश कर जाते हैं। ५

प्यारे वत्स ! वेदान्तों के पढ़ने से जो ज्ञान प्राप्त होता है, उससे परमात्मा जाना नहीं जा सकता। परमात्मा का ज्ञान तो चित्त शुद्धि और सन्यास योग से होता है। वत्स ! जिस योगी का चित्त सन्यास योग के अभ्यास से शुद्ध हो गया है, वह मरते समय एक मात्र ब्रह्म का ही चिन्तन करता हुआ, उनमें ही विभोर रहता हुआ, मरकर ब्रह्म में ही मिल जाता है। मुक्ति पा लेता है।

ऐसे योगी की देह को आरम्भ करने वाली प्राणादि १६ कलाएँ अपने-अपने कारण में मिल जाती हैं। देह के आश्रित चक्षु आदि इन्द्रियों में स्थित सब देवता अपने-अपने प्रति देवता आदित्यादि में लीन हो जाते हैं। ब्रह्म ! उस योगी के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कर्म और विज्ञानमय आत्मा आदि सब के सब, ब्रह्म में लीन हो ब्रह्मरूप हो जाते हैं। ६-७

प्यारे मित्र ! प्रश्नोपनिषद् में १६ कलाओं की चर्चा है। वे १६ कलाएँ ये हैं—प्राण, श्रद्धा, आकाश, वायु, तेज, जल, पृथिवी, इन्द्रिय, मन, अन्न, वीर्य, तप, मंत्र, कर्म लोक और लोकों के नाम।

महर्षि अङ्गिरा आगे बोले—

वत्स ! नदियाँ जब समुद्र में गिरती हैं, तब उसमें मिल एक हो जाती हैं। उनका नाम व अस्तित्व मिट जाता है। उसी प्रकार सिद्ध योगी ब्रह्म में मिल कर ब्रह्म हो जाता है। वह अपने नाम रूपादि से सर्वथा मुक्त हो जाता है। ८

प्यारे वत्स ! इस लोक में जो कोई ब्रह्म को जान लेता है; वह (जीते-जी) ब्रह्म हो जाता है। फिर उसकी कोई दूसरी गति नहीं होती। उसके ब्रह्म होने में कोई बाधा नही पड़ती। उसके कुल में भी कोई अब्रह्मवित[1] नहीं होता। वह शोक-सागर को तर जाता है। अपने लोगों से बिछुड़ने आदि का शोक उसे नहीं होता। वह पुण्य-पाप से भी परे हो जाता है। उसे ये नहीं व्यापते। उसके चित्त में धर्म-अधर्म के विचार भी नहीं उठते। वह अविद्या रूपी हृदय ग्रंथी से

---

१ अब्रह्मवित=ब्रह्म को नहीं जानने वाला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विमुक्त हो, अमरत्व को प्राप्त कर लेता है। आवागमन को तर जाता है। ९

प्यारे वत्स ! जो क्रियावान है; श्रोलिय (वह ब्राह्मण जिसने वेद का अध्ययन किया है) और ब्रह्मनिष्ट (ब्रह्म ज्ञान सम्पन्न) हैं, जो परमात्मा को जानने के लिए लालायित हैं, तथा जो श्रद्धा भक्ति से एकर्षि नामक अग्नि में हवन करते हैं तथा जिन्होंने सिर पर अग्नि धारण रूप कठिन शिरोंव्रत किया है; वत्स ! उन्हीं से उस पराविद्या की चर्चा करनी चाहिए। १०

प्यारे मित्र ! जिज्ञासु शौनक जी ब्रह्म विद्या के उपदेश के लिए, महर्षि अङ्गिरा के पास श्रद्धापूर्वक गए। उन्हें योग्य अधिकारी पाकर महर्षि ने उन्हें ब्रह्म विद्या का उपदेश दिया। शौनक जी की तरह जो कोई ब्रह्म विद्या का अधिकारी आत्मज्ञानी के पास उपदेश के लिए जाय, वह उसे ब्रह्मतत्व का उपदेश देवे। किन्तु जिसने कठिन शिरोव्रत का अनुष्ठान नहीं' किया हो, उसे इस विद्या का उपदेश नहीं देवे। असंस्कारी को दिया गया उपदेश निष्फल होगा। जिन ब्रह्मा आदि ऋषियों से यह ब्रह्म विद्या परम्परा क्रम से प्राप्त हुई, उन सब परमर्षियों को बार-बार अनेक बार नमस्कार है।

प्यारे मित्र ! ब्रह्म विद्या की चर्चा समाप्त हुई। बड़ा आनन्द आया। हम श्री रामभजन जी के आभारी हैं; जिनकी प्रेरणा से इस ब्रह्म विद्या की चर्चा में लगे। उन्हें बार-बार धन्यवाद है।

प्यारे मित्र ! एक मात्र भगवान पर भरोसा रख साधना में लगे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रहें। मन को शांत व चित्त को शुद्ध करें। मन इधर-उधर भोगों पर भागेगा। उसे लौटा-लौटा लावें। उसे प्रबोधें। कहें—"रे मन्! सारा जीवन भटकता रहा। कहो क्या पाया! भोगों से अब तक न अघाया, तो क्या अघा पाएगा। प्यारे! टिक जा भगवान पर; असीम सुख पाएगा। तृप्त-तृप्त हो जायेगा।" मित्र! फिर देखिएगा—एक न एक दिन, चित्त भगवान के चिन्तन में लग जायेगा। वहीं टिक जाएगा।

प्यारे मित्र! जीवन का मुख्य उद्देश्य ब्रह्म की प्राप्ति है। ब्रह्म में मिल कर, ब्रह्म बन जाना है। साधना के अन्तिम छोर तक पहुँचने पर, रास्ते में स्वर्ग लोकादि की प्राप्ति रूप कई उपलब्धियाँ मिलती हैं। इन लोकों में लोग छूटकर मन चाहा भोग भोगते हैं। परन्तु पुण्य क्षीण होने पर पुनः भूलोक में जन्मते हैं। उन्हें सही माने में मुक्ति नहीं मिलती। अतएव मेरी बात मानिए तो भोगों से ललचाकर स्वर्गादि लोकों की कामना न काजिए। लक्ष्य ब्रह्म प्राप्ति का ही रखिए। एक मात्र ब्रह्म प्राप्ति का ही।

प्यारे मित्र! प्रीति अच्छी है; किन्तु आसक्ति अच्छी नहीं। किसी में भी आसक्ति बनी रहने से मुक्ति न मिलेगी। मन के कहीं भी अटके रहने में यहीं भूलोक में ही अटके रह जाएँगे। जन्म-मरण न तर पाएँगे अतएव, भीतर ही भीतर सब से विरक्त हो रहे। मित्र! हम दोनों एक दूसरे से भी।

प्यारे मित्र! अपने जीवन-नौका का पतवार भगवान को सौंप निमग्न हो विचरें। भविष्य की चिन्ता त्यागें। जैसे वे रखेंगे वैसे रहेंगे। जो खाने को देंगे, वह खाएँगे। जो पहनने को देंगे, वह पहनेंगे। जहाँ रखेंगे, वहाँ रहेंगे। जो कराएगे-वह करेंगे।

कुछ लोग कहेंगे—"बिना हाथ पाँव चलाए, भगवान भी खाना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नहीं देंगे।" उन बेचारों को मालूम नहीं कि हाथ-पाँव भगवान की प्रेरणा से ही चलते हैं; और बन्द भी उन्हीं की प्रेरणा से होते हैं। हमारी आपकी क्या विसात ! वे कार के हाँकते हैं।

प्यारे मित्र ! लगता है—अन्य बंधन ढीले पड़ रहे हैं। किन्तु आप के प्रति आसक्ति बंधन ढीला न हो पाया है। प्रभु का कृपा हो जाय, तो यह आपसी आसक्ति बंधन भी टूट जाय। बिना इसके टूटे निस्तार नहीं। इस एक बंधन के चलते—दोनों मित्र जन्म-मरण के चक्र में पड़े रहेंगे।

प्यारे मित्र ! यह हमारी बारहवीं रचना भी समाप्त हुई। भगवान के पूजा स्वरूप लिखा हूँ। उनने ही जो लिखवाया है—सो लिखा हूँ। उनकी वस्तु उन्हीं को समर्पित है। मित्र ! यही हमारी पूजा है। यही अर्चना है। यही पूजा की सफल सामग्री है।

प्यारे मित्र ! भगवान करें। इस ब्रह्म विद्या का घर-घर प्रचार होवे। लोग भौतिकता से आध्यात्मिकता की ओर मुड़ें। अपने जीवन में सत्य और अहिंसा को उतारें। आपस के वैर-भाव भुला कर परस्पर के सहयोग से सुखमय जीवन बितावें।

प्यारे मित्र ! हमारे आप के जीवन का सार परहित काम आने में है। जगहित मर मिटने में है। जब तक देह चलती है, दीन-दुखियों के काम आते रहें।

अब विदा लेता हूँ। फिर अगली रचना में मिलेंगे ही। भगवान आप को सदा प्रसन्न रखें। आप का परिवार फूलता-फलता रहे। प्यारे मित्र ! साधना में लगे रहें, आप का सदा मंगल होगा।

अनन्त शुभ कामनाओं के साथ पुनः प्रणाम।

आप का आत्मरूप

गणेश

सत्यमेव जयते !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मुण्डकोपनिषद

प्रथम मुण्डक—खण्ड १

मूल मंत्र—

ॐ ब्रह्मा देवानां प्रथमः सम्बभूव
विश्वस्य कर्ता भुवनस्य गोप्ता ।
स ब्रह्मविद्यां सर्वविद्याप्रतिष्ठा
मथर्वाय ज्येष्ठपुत्राय प्राह ।। १

अथर्वणे यां प्रवदेत ब्रह्मा—
थर्वातां पुरोवाचाङ्गिरो ब्रह्मविद्याम ।
स भारद्वाजाय सत्यवहाय प्राह
भारद्वाजोऽङ्गिरसे परावराम् ।। २

शौनको ह वै महाशालोऽङ्गिरसं विधिवदुपसन्नः पप्रच्छ । कस्मिन्नु भगवो विज्ञाते सर्वमिदं विज्ञातं भवतीति ।। ३

तस्मै स होवाच । द्वे विद्ये वेदितव्ये इति ह स्म यद्ब्रह्मविदो वदन्ति परा चैवापरा च ।। ४

तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षा कल्पो व्याकरणं नीरुक्तं छन्दो ज्योतिषमिति । अथ परा यया तदक्षरमधिगम्यते ।।५

यत्तदद्रेश्यमग्राह्यमगोत्रम वर्णमचक्षुः श्रोत्रं तदपाणिपादम । नित्यं विभुं सर्वगतं सुसूक्ष्मं तदव्ययं यद्भूतयोनिं परिपश्यन्ति धीराः ।।६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यथोर्णनाभिः सृजते गृह्णते च
यथा पृथिव्यामोषधयः सम्भवन्ति ।
यथा सतः पुरुषात्केशलोमानि
तथाक्षरात्ससम्भवतीह विश्वम् ॥ ७

तपसा चीयते ब्रह्म ततोऽन्नमभिजायते ।
अन्नात्प्राणो मनः सत्यं लोकाः कर्मसु चामृतम् ॥ ८
यः सर्वज्ञः सर्वविद्यस्य ज्ञानमयं तपः ।
तस्मदेतद्ब्रह्म नाम रूपमन्नं च जायते ॥ ९

प्रथम मुण्डक—खण्ड २

तदेतत्सत्यं मन्त्रेषु कर्माणि कवयो यान्यपश्यंस्तानि त्रेतायां बहुधा सन्ततानि । तान्याचरथ नियत सत्यकामा एष वः पन्थाः सुकृतस्य लोके ॥ १

यदा लेलायते ह्यर्चिः समिद्धे हव्यवाहने ।
तदाज्यभागावन्तरेणाहुतीः प्रतिपादयेत् ॥ २

यस्याग्निहोत्रमदर्शमपौर्णमास-
मचातुर्मास्यमनाग्रयणमतिथिवर्जितंच ।
अहुतमवैश्वदेवमविधिना हुत-
माससमांस्तस्य लोकान्हिनस्ति ॥ ३

काली कराली च मनोजवा च
सुलोहिता या च सुधूम्रवर्णा ।
स्फुलिङ्गिनी विश्वरुची च देवी
लेलायमाना इति सप्त जिह्वाः ॥ ४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एतेषु यश्चरते भ्राजयानेषु
यथाकालं चाहुतयो ह्याददायन् ।
तं नयन्त्येताः सूर्यस्य रश्मयो
यत्र देवानां पतिरेकोऽधिवासः ॥ ५

एह्येहीति तमाहुतयः सुवर्चसः
सूर्यस्य रश्मिभिर्यजमानं वहन्ति ।
प्रियां वाचमभिवदन्त्योऽचयन्त्य
एष वः पुण्यः सुकृतो ब्रह्मलोकः ॥ ६

प्लवा ह्येते अदृढा यज्ञरूपा
अष्टादशोक्तमवरं येषु कर्म ।
एतच्छ्रेयो येऽभिनन्दन्ति मूढा
जरामृत्युं ते पुनरेवापि यन्ति ॥ ७

अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः ।
स्वयं धीराः पण्डितं मन्यमानाः ।
जङ्घन्यमानाः परियन्ति मूढा
अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः ॥ ८

अविद्यायां वहुधा वर्तमाना
वयं कृतार्था इत्यभिमन्यन्ति बालाः ।
यत्कर्मिणो न प्रवेदयन्ति राग-
त्तेनातुराः क्षीणलोकाश्च्यवन्ते ॥ ९

इष्टापूर्तं मन्यमाना वरिष्ठं
नान्यच्छ्रेयो वेदयन्ते प्रमूढाः ।
नाकस्य पृष्ठे ते सुकृतेऽनुभूत्वे-
मं लोकं हीनतरं वा विशन्ति ॥१०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तपः श्रद्धे ये ह्युपवसन्त्यरण्ये ॥
शान्ता विद्वांसो भैक्ष्यचर्यां चरन्तः ।
सूर्यद्वारेण ते विरजाः प्रयान्ति
यत्रामृतः स पुरुषो ह्यव्ययात्मा ॥ ११

परीक्ष्य लोकान्कर्मचितान्ब्राह्मणो
निर्वेदमायान्नास्त्यकृतः कृतेन ।
तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्
समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम् ॥१२

तस्मै स विद्वानुपसन्नाय सम्य-
क्प्रशान्तचित्ताय शमान्विताय ।
येनाक्षरं पुरुषं वेद सत्यं
प्रोवाच तां तत्त्वतो ब्रह्मविद्याम् ॥ १३

द्वितीय मुण्डक-खण्ड १

तदेतत्सत्यं यथा सुदीप्तात्पावकाद्विस्फुलिङ्गाः
सहस्रशः प्रभवन्ते सरूपाः ।
तथाक्षराद्विविधाः सोम्य भावाः
प्रजायन्ते तत्र चैवापि यन्ति ॥ १

दिव्यो ह्यमूर्तः पुरुषः सबाह्याभ्यन्तरो ह्यजः ।
अप्राणो ह्यमनाः शुभ्रो ह्यक्षरात्परतः परः ॥ २

एतस्माज्जायते प्राणो मनः सर्वेन्द्रियाणि च ।
खं वायुर्ज्योतिरापः पृथिवी विश्वस्य धारिणी ॥ ३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अग्निर्मूर्धा चक्षुषी चन्द्रसूर्यौ
दिशः श्रोते वाग्विवृताश्च वेदाः ।
वायु प्राणो हृदयं विश्वमस्य
पद्भ्यां पृथ्वि ह्येष सर्वभूतान्तरात्मा ॥ ४

तस्मादग्निः समिधो यस्य सूर्यः
सोमात्पर्जन्य ओषधयः पृथिव्याम् ।
पुमान्रेतः सिञ्चति योषितायां
बह्वीः प्रजा पुरुषात्सम्प्रसूताः ॥ ५

तस्मादृचः साम यजूंषि दीक्षा
यज्ञाश्च सर्वे क्रतवो दक्षिणाश्च ।
संवत्सरश्च यज्ञमानश्च लोकः
सोमो यत्र पवते यत सूर्यः ॥६

तस्मात्च देवा बहुधा सम्प्रसूताः
साध्या मनुष्याः पशवो वयांसि ।
प्राणापानौ व्रीहियवौ तपश्च
श्रद्धा सत्यं ब्रह्मचय विधिश्च ॥ ७

सप्त प्राणाः प्रभवन्ति तस्मात्
सप्त र्चिषः समिधः सप्त होमाः ।
सप्त इमे लोका येषु चरन्ति प्राणा
गुहाशया निहिताः सप्त सप्त ॥ ८

अतः समुद्रा गिरयश्च सर्वे-
ऽस्मात्स्यन्दन्ते सिन्धवः सर्वरुपाः ।
अतश्च सर्वा ओषधयो रसश्च
येनैष भूतैस्तिष्ठते ह्यन्तरात्मा ॥ ९

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुरुष एवेदं विश्वं कर्म तपो ब्रह्म परामृतम्। एतद्यो वेद निहितं गुहायां सोऽविद्याग्रन्थिं विकिरतीह सोम्य ॥ १०

द्वितीय मुण्डक-खण्ड २

आविः संनिहितं गुहाचर नाम महत्पदमत्रैतत्समर्पितम्। एजत्प्राणान्निमिषच्च यदेतज्जानथ सदसद्वरेण्यं परं विज्ञानाद्यद्वरिष्ठं प्रजानाम् ॥१

यदर्चिमद्यदणुभ्योऽणु च यस्मिँल्लोका निहिता लोकिनश्च। तदेतदक्षरं ब्रह्म स प्राणस्तदु वाङ्मनः तदेतत्सत्यं तदमृतं तद्वेद्धव्यं सोम्य विद्धि ॥२

धनुर्गृहीत्वौपनिषदं महास्त्रं
शरं ह्युपासानिशितं सन्धयीत।
आयम्य तद्भावगतेन चेतसा
लक्ष्यं तदेवाक्षरं सोम्य विद्धि ॥ ३

प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते।
अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् ॥ ४

यस्मिन्द्यौः पृथिवी चान्तरिक्ष-
मोतं मनः सह प्राणैश्च सर्वैः।
तमेवैकं जानथ आत्मानमन्या
वाचो विमुञ्चथामृतस्यैष सेतुः ॥ ५

अरा इव रथनाभौ संहता यत्र नाड्यः
स एषोऽन्तश्चरते बहुधा जायमानः।
ओमित्येवं ध्यायथ आत्मानं
स्वस्ति वः पाराय तमसः परस्तात् ॥ ६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यः सर्वज्ञः सर्वविद्यस्यैष महिमा भुवि ।
दिव्ये ब्रह्मपुरे ह्येष व्योम्न्यात्मा प्रतिष्ठितः ॥
मनोमयः प्राणशरीरनेता
प्रतिष्ठितोऽन्ने हृदयं सन्निधाय ।
तद्विज्ञानेन परिपश्यन्ति धीरा
आनन्दरूपममृतं यद्विभाति ॥ ७

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः ।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे ॥८

हिरण्मये परे कोशे विरजं ब्रह्म निष्कलम् ।
तच्छुभ्रं ज्योतिषां ज्योतिस्तद्यदात्मविदो विदुः ॥९

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं
नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः ।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं
तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥ १०

ब्रह्मैवेदममृतं पुरस्तद्ब्रह्म पश्चाद्ब्रह्म दक्षिणतश्चोत्तरेण ।
अधश्चोर्ध्वं च प्रसृतं ब्रह्मैवेदं विश्वमिदं वरिष्ठम् ॥ ११

तृतीय मुण्डक—खण्ड १

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया
समान वृक्षं परिषस्वजाते ।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्य-
नश्नन्नन्यो अभिचाकशीति ॥ १

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समाने वृक्षे पुरुषो निमग्नो–
ऽनीशया शोचति मुह्यमानः ।
जुष्टं यदा पश्यत्यन्यमीश–
मस्य महिमानमिति वीतशोकः ॥ २

यदा पश्यः पश्यते रुक्मवर्णं
कर्तारमीशं पुरुषं ब्रह्मयोनिम् ।
तदा विद्वान्पुण्यपापे विधूय
निरञ्जनः परमं साम्यमुपैति ॥ ३

प्राणो ह्येष यः सर्वभूतैर्विभाति
विजानन्विद्वान्भवते नातिवादी ।
आत्मक्रीड आत्मरति क्रियावा-
नेष ब्रह्मविदां वरिष्ठः ॥४

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा
सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम् ।
अन्तः शरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो
यं पश्चन्ति यतयः क्षीणदोषाः ॥ ५

सत्यमेव जयति नानृतं
सत्येन पन्था विततो देवयानः ।
येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा
यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम् ॥ ६

बृहच्च तद्दिव्यमचिन्त्यरूपं
सूक्ष्माच्च तत्सूक्ष्मतरं विभाति ।
दूरात्सुदूरे तदिहान्तिके च
पश्यत्स्विहैव निहितं गुहायाम् ॥ ७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

न चक्षुषा गृह्यते नापि वाचा
नान्यैर्देवैस्तपसा कर्मणा वा।
ज्ञानप्रसादेन विशुद्धसत्त्व-
स्ततस्तु तं पश्यते निष्कलं ध्यायमानः ॥ ८

एषोऽणुरात्मा चेतसा वेदितव्यो
यस्मिन्प्राणः पञ्चधा संविवेश ।
प्राणैश्चित्तं सर्वमोतं प्रजानां
यस्मिन्विशुद्धे विभवत्येष आत्मा ॥ ९

यं यं लोकं मनसा संविभाति
विशुद्धसत्त्वः कामयते यांश्च कामान् ।
तं तं लोकं जयते तांश्च कामां-
स्तस्मादात्मज्ञं ह्यर्चयेद् भूतिकामः ॥ १०

तृतीय मुण्डक—खण्ड २

स वेदैतत्परमं ब्रह्म धाम
यत्र विश्वं निहितं भाति शुभ्रम्।
उपासते पुरुष ये ह्यकामा-
स्ते शुक्रमेतदतिवर्तन्ति धीराः ॥ १

कामान्यः कामयते मन्यमानः
स कामभिर्जायते तत्र तत्र।
पर्याप्तकामस्य कृतात्मनस्त्वि-
हैव सर्वे प्रविलीयन्ति कामाः ॥ २

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो
न मेधया न बहुना श्रुतेन ।
यमेवैष वृणुते तेन लभ्य-
स्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनुं स्वाम् ॥ ३

नायमात्मा बलहीनेन लभ्यो
न च प्रमादात्तपसो वाप्यलिङ्गात्
एतै रुपायैर्यतते यस्तु विद्वां-
स्तस्यैष आत्मा विशते ब्रह्मधाम ॥ ४

संप्राप्यैनमृषयो ज्ञानतृप्ताः
कृतात्मानो वीतरागाः प्रशान्ताः ।
ते सर्वगं सर्वतः प्राप्य धीरा
युक्तात्मानः सर्वमेवा विशन्ति ॥ ५

वेदान्त विज्ञान सुनिश्चितार्थाः
संन्यासयोगाद्यतयः शुद्धसत्त्वः ।
ते ब्रह्मलोकेषु परान्तकाले
परामृताः परिमुच्यन्ति सर्वे ॥ ६

गताः कलाः पञ्चदश प्रतिष्ठा
देवाश्च सर्वे प्रतिदेवतासु ।
कर्माणि विज्ञानमयश्च आत्मा
परेऽव्यये सर्व एकीभवन्ति ॥ ७

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रे-
ऽस्तं गच्छन्ति नामरुपे विहाय ।
तथा विद्वान्नामरुपाद्विमुक्तः
परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ॥ ८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स यो ह वै तत्परमं ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति नास्याब्रह्मवित्कुले भवति । तरति शोकं तरति पाप्मानं गुहाग्रन्थिभ्यो विमुक्तोऽमृतो भवति ।। ९

क्रियावन्तः श्रोत्रिया ब्रह्मनिष्ठाः
स्वयं जुह्वत एकर्षि श्रद्धयन्तः ।
तेषामेवैषां ब्रह्मविद्यां वदेत
शिरोव्रतं विधिवद्यैस्तु चीर्णम् ।। १०

उपसंहार

तदेतत्सत्यमृषिरङ्गिराः पुरोवाच नैतदचीर्णव्रतोऽधीते । नमः परमऋषिभ्यो नमः परमऋषिभ्यः ।। ११

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

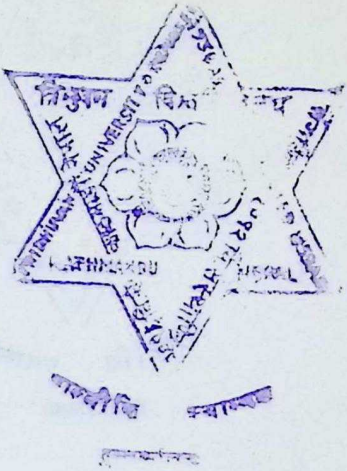

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लेखक की कृतियाँ

१--गीतामृत
(श्रीमद् भगवद् गीता का सुन्दर, सरल भावमय
२—कठोपनिषद् प्रकाश
(कठोपनिषद् की सरल बोधगम्य व्याख्या)
३—योग वाशिष्ठ प्रवेश
(योग वाशिष्ठ का सार-संकलन)
४--मेघदूत दर्शन
५--मनुस्मृति-संदेश
६--हमारी संस्कृति-छवि
(ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि में भारतीय संस्कृति की रूप-रेखा)
७—स्नेहभरी कहानियाँ
८—आध्यात्मिक पत्र
९—सियावर राम
१०—पातञ्जल योग-प्रकाश
११—संत समागम
१२—मुण्डकोपनिषद् प्रकाश
१३—श्वेताश्वतरोपनिषद् प्रकाश
१४--केनोपनिषद् प्रकाश

प्राप्तिस्थान :
१—भारद्वाज भवन, मिल एरिया, साकची, जमशेदपुर-१
फोन नं०
२—श्री किसोरी प्रसाद, व्रास आर्टस पैलेस, चर्च रोड, राची,
फोन नं०
३—राजेन्द्र स्टोर्स, साकची, बाजार, जमशेदपुर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu